नीपको ज्योति

अंक 14, सितम्बर, 2019

ISO 9001 & 14001
OHSAS 18001

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड
(मिनी रत्न, श्रेणी – I, भारत सरकार का उद्यम)

North Eastern Electric Power Corporation Limited
(Mini Ratna, Category - I, A Government of India Enterprise)
www.neepco.gov.in

क्रम संख्या 03

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

गृह मंत्रालय

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

महानिदेशालय असम राइफल्स

DIRECTORATE GENERAL ASSAM RIFLES

शिलांग – 793010

SHILLONG - 793010

प्रमाणित किया जाता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), शिलांग की राजभाषा शील्ड योजना के तहत नार्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर का॰ लिमिटेड, शिलांग ने वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं श्रेष्ठ कार्य निष्पादन में तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

इस उपलब्धि के लिए उन्हें राजभाषा ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

दिनांक : 07 जून 2019

महानिदेशक असम राइफल्स
Director General Assam Rifles
एवं अध्यक्ष, नराकास, शिलांग
Chairman, TOLIC, Shillong

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड
(मिनी रत्न, श्रेणी - I, भारत सरकार का उद्यम)
North Eastern Electric Power Corporation Limited
(Mini Ratna, Category - I, A Government of India Enterprise)

नीपको
NEEPCO
ISO 9001 & 14001
OHSAS 18001

संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष भी नीपको, मुख्यालय से हिंदी दिवस के अवसर पर **'नीपको ज्योति'** हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी संस्थान के विकास में तकनीक, प्रबंधन के साथ-साथ एक संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है। हमारा निगम पूर्वोत्तर में मुख्य रूप से अपना कार्य निष्पादित करती है, जहाँ अनेकों क्षेत्रीय तथा स्थानीय भाषा बोली जाती है। हमारी जनशक्ति में इनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है। हमें निगम के भीतर अनेकों स्तरों पर तथा आस-पास के लोगों से सहयोग और समन्वय की आवश्यकता होती है। इन सब चीजों के लिए हम सबों के बीच हिंदी एक संपर्क का माध्यम बन जाती है। आज तकनीक का युग है। अत: हमें अपने कार्यालय में हिंदी को तकनीक से भी जोड़ने की आवश्यकता है। इसके लिए कंप्यूटर पर हिंदी के उपयोग को और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। राजभाषा हिंदी का विकास और संवर्धन करना हमारा एक सांविधिक दायित्व भी है।

अत: मैं आशा करता हूँ कि निगम में निरंतर विद्युत के विकास के साथ-साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए आप सभी प्रयासरत रहेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर नीपको ज्योति पत्रिका के 14 अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(वी. के. सिंह)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड
(मिनी रत्न, श्रेणी - I, भारत सरकार का उद्यम)
North Eastern Electric Power Corporation Limited
(Mini Ratna, Category - I, A Government of India Enterprise)

नीपको NEEPCO
ISO 9001 & 14001
OHSAS 18001

संदेश

मुझे खुशी हो रही है कि निगम से इस वर्ष भी वार्षिक हिंदी पत्रिका **'नीपको ज्योति'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

कारपोरेरेट कार्यालय, शिलांग द्वारा राजभाषा हिंदी से संबंधित सुरूचिपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर नीपको ज्योति पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। यह हमारे नीपको परिवार के सदस्यों को हिंदी में अपनी सृजनात्मक क्षमता को जागृत करने के लिए भी प्रेरित करती है। इसके फलस्वरूप राजभाषा प्रचार-प्रसार में बढ़ावा मिलेगा तथा मुझे विश्वास है कि निगम का प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा हिंदी में अपना दैनिक कार्य में करने का प्रयास करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर नीपको ज्योति पत्रिका के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(एम.शिवा शन्मुगानाथन)
निदेशक (वित्त)

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड
(मिनी रत्न, श्रेणी - I, भारत सरकार का उद्यम)
North Eastern Electric Power Corporation Limited
(Mini Ratna, Category - I, A Government of India Enterprise)

ISO 9001 & 14001
OHSAS 18001

संदेश

निगम मुख्यालय, शिलांग के राजभाषा अनुभाग के प्रयास से प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी **'नीपको ज्योति'** के प्रकाशन पर मैं प्रसन्नता व्यक्त करता हूँ।

भाषा का मुनष्य से गहरा संबंध है। भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही होती है। भाषा से किसी देश के समाज की संस्कृति की पहचान होती है। निगम का मुख्य उद्देश्य विदयुत का उत्पादन करना है जिससे की पूर्वोत्तर के साथ-साथ संपूर्ण भारत वर्ष की प्रगति में योगदान किया जा सके। हमारा निगम बहुभाषा-भाषी कर्मियों के संयोग से बना है तथा अपने कार्यों को सुचारू निष्पादन के लिए अंग्रेजी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषा तथा हिंदी का उपयोग महत्वपूर्ण हो जाता है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो स्थानीय भाषा के साथ मिलकर एक संपर्क सूत्र का कार्य करती है और यह समझने तथा समझाने में भी कड़ी का कार्य करती है। अत: यह हम सब का दायित्व बनता है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति को अपने कार्यालयीन कामों में उपयोग करने के लिए हर संभव प्रयास करें। इसमें केवल एक वर्ग के कर्मियों का योगदान नहीं होना चाहिए, अपितु निगम के सभी वर्ग के कर्मचारी इस पर ध्यान दें तथा इसके उत्तरोत्तर प्रचार-प्रसार में अपना हर संभव योगदान दें।

मुझे आशा है कि नीपको ज्योति पत्रिका निगम में राजभाषा हिंदी को अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार में अभिवृद्धि करने का एक माध्यम बनी रहेगी।

हिंदी दिवस के अवसर पर नीपको ज्योति अंक 14 के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अनिल कुमार)
निदेशक (कार्मिक)

संपादक मंडल की ओर से

नीपको ज्योति का 14वाँ अंक आपको समर्पित है। इस पत्रिका के माध्यम से निगम में राजभाषा की गतिविधियों से अवगत कराने का प्रयास किया गया है।

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के क्षेत्र में हम पूरी निष्ठा के साथ काम कर रहे हैं। निगम में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी रूचि में वृद्धि हुई है। इसका प्रमाण हमें कारपोरेट मुख्यालय, शिलांग सहित निगम के विभिन्न कार्यालयों एवं संयंत्रों से प्रकाशित की जानेवाली गृह पत्रिकाओं में प्रकाशन हेतु नीपको कर्मियों द्वारा उपलब्ध कराए गए लेखों एवं पत्राचार से मिलता है। इसके अतिरिक्त हिंदी में सराहनीय कार्य के लिए विभिन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के द्वारा प्रदान किए गए शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र भी इसकी पुष्टि करता है।

इस पत्रिका का उद्देश्य राजभाषा के विकास के साथ-साथ निगम में कार्यरत कर्मचारियों की प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए एक अवसर प्रदान करना भी है। इस अंक में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्राप्त लेख और कविताओं को भी स्थान दिया गया है। इसके अलावा निगम में समय-समय पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों को भी दर्शाने का प्रयास किया गया है।

संपादक मण्डल का यह प्रयास रहता है कि नीपको ज्योति अधिक से अधिक आकर्षक एवं रोचक बने और निगम में राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास के लिए सदैव समर्पित रहे। यह पत्रिका पाठकों के बीच ज्ञान और जागरूकता का केन्द्र बनी रहे, इसके लिए आप सभी का सुझाव एवं सहयोग सदा अपेक्षित है।

धन्यवाद

नीपको ज्योति

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड

मुख्य संरक्षक:
श्री वी. के. सिंह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक:
श्री अनिल कुमार
निदेशक (कार्मिक)

उपदेष्टा:
श्री पी.एस.बरठाकुर
कार्यपालक निदेशक (मा.सं.)

सम्पादक मण्डल
श्री जे.एन.सिंह, महाप्रबंधक (मा.सं.)
श्री अनिल कुमार दास, महाप्रबंधक (वित्त)
श्री अटल अमर प्रभात कुजूर, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.)
श्रीमती एल.ए. खारमवफ्लांग, उप-महाप्रबंधक (सी.सी.)
श्री अरूण कुमार प्रधान, उप-प्रबंधक (हिन्दी)

पत्राचार का पता:
नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड
ब्रुकलैंड कम्पाउंड, लोअर न्यू कालोनी
शिलांग - 793003

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं कविताओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड या संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

लेख एवं कविता — पृष्ठ संख्या

	लेख एवं कविता	पृष्ठ संख्या
1.	नीपको एक परिचय	6
2.	निगम में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस एवं पुरस्कार	7
3.	निगम में आयोजित हिंदी कार्यशाला पर अद्यतन रिपोर्ट	17
4.	उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण	23
5.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	23
6.	समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली में विशेष राजभाषा कार्यक्रम	24
7.	लाभांश का भुगतान	25
8.	प्रधानमंत्री द्वारा पारे जल विद्युत परियोजना राष्ट्र को समर्पित	25
9.	नीपको को प्रशंसा-पत्र	25
10.	निगम में आयोजित अन्य कार्यक्रमों की झलक	25
11.	पर्यावरण संरक्षण तथा धारणी विकास	30
12.	राष्ट्र के निर्माण में पूर्वोत्तर के भाषाओं की भूमिका	32
13.	मैं जीवन हूँ	33
14.	विभिन्न जनजातियों का एक प्रदेश (अरूणाचल प्रदेश)	34
15.	पूर्वोत्तर भारत: साहित्य और संस्कृति	35
16.	कर्मफल	37
17.	अनमोल वचन	37
18.	जीवन में ईमानदारी की भूमिका	38
19.	डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम की चन्द लाईन	39
20.	प्राचीन काल में असम के शोणितपुर जनपद	40

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन (नीपको) लिमिटेड - एक परिचय

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन (नीपको) लिमिटेड, अनुसूची ए- मिनी-रत्न (श्रेणी-।) सीपीएसई है, जिसकी प्राधिकृत शेयर पूंजी ₹5000.00 करोड़ रुपए है तथा इसकी स्थापना 2 अप्रैल, 1976 को विद्युत मंत्रालय के तहत भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्व वाला उद्यम के रूप में हाइड्रो, थर्मल एवं सौर ऊर्जा स्टेशनों की योजना, उन्नयन, अन्वेषण, सर्वेक्षण, डिजाइन, निर्माण, उत्पादन, प्रचालन एवं रख-रखाव के लिए किया गया। वर्तमान में नीपको की कुल अधिष्ठापित क्षमता 1457 मेगावाट है, जिसमें से 925 मेगावाट हाइड्रो, 527 मेगावाट थर्मल और 5 मेगावाट सौर पीवी क्षेत्र का है।

नीपको के प्रचलनाधीन विद्युत संयंत्र:

क्र.सं.	संयंत्र का नाम	राज्य	अधिष्ठापित क्षमता (मेगावाट)	चालू होने का वर्ष
		जल		
1	कोपिली जल-विद्युत संयंत्र	असम	275	50 मेगावाट: मई 1984 100 मेगावाट: जुलाई 1988 100 मेगावाट: जुलाई 1997 25 मेगावाट: जुलाई 2004
2	दोयांग जल-विद्युत संयंत्र	नागालैंड	75	जुलाई 2000
3	रंगानदी जल-विद्युत संयंत्र	अरूणाचल प्रदेश	405	मार्च 2002
4	तुईरियल जल-विद्युत परियोजना	मिजोरम	60	यूनिट - 1: अक्टूबर 2017 यूनिट - 2: जनवरी 2018
5	पारे जल-विद्युत परियोजना	अरूणाचल प्रदेश	110	मई 2018
		जल कुल	**925**	
		ताप		
6	असम गैस आधारित पावर संयंत्र	असम	291	जीटीजी: 1995/96 एसटीजी: 1998
7	अगरतला गैस टरबाइन संयुक्त चक्रीय संयंत्र	त्रिपुरा	135	जून 1998 (84 मेगावाट) जुलाई व सितम्बर 2015 (51 मेगावाट)
8	त्रिपुरा गैस आधारित पावर परियोजना	त्रिपुरा	101	जीटीजी: दिसम्बर 2015 एसटीजी: मार्च 2017
		जल		
		ताप कुल	**527**	
		सोलर		
9	ग्रिड इंटरएक्टिव सौर ऊर्जा संयंत्र, मोनारचक	त्रिपुरा	5	फरवरी 2015
		ताप कुल	**5**	
		कुल	**1457**	

नीपको – निगम में राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

नार्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन के मुख्यालय, शिलांग में हिंदी पखवाड़ा/ हिन्दी दिवस

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन के मुख्यालय,शिलांग में 01 सितम्बर 2018 को हिन्दी पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया। निगम के निदेशक (कार्मिक), श्री सत्यब्रत बरगोहाईं ने प्रदीप प्रज्ज्वलित करके हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री अनिल कुमार,कार्यपालक निदेशक (मा.सं.) ने अपने संबोधन में निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कहा कि हिंदी का प्रयोग केवल हिंदी पखवाड़ा और हिंदी दिवस के आयोजन तक ही सीमित न रखा जाय, बल्कि प्रत्येक दिन कार्यालयीन काम में यथासंभव इसके प्रयोग की कोशिश की जाय। हमें अपने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ावा देना चाहिए। हिंदी दिवस के अवसर पर अलग अलग कार्यालयों में हिंदी माह, हिंदी पखवाड़ा तथा हिंदी सप्ताह मनाया जाता है और इस दौरान हिंदी के विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाते हैं। हम लोग भी अपने कार्यालय में पखवाड़ा के दौरान हिंदी की कई प्रतियोगिताएं आयोजित कर रहे हैं। आप सभी से मेरा आग्रह है कि इन प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें।

मुख्य अतिथि श्री सत्यब्रत बरगोहाईं, निदेशक (कार्मिक) ने अपने संबोघन में कहा कि आप सभी सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने की पूरी कोशिश करें। जहाँ हिंदी के उपयुक्त शब्द नहीं मालूम पड़ते हैं वहाँ आप अंग्रेजी के प्रचलित शब्द जैसे- जनरेशन,ट्रांसमीशन का प्रयोग कर सकते हैं। हिंदी में हस्ताक्षर करके पत्राचार को बढ़ा सकते हैं। हिंदी के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाना हमारा दायित्व है। हमारे निगम के मुख्यालय को राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति में सक्रिय योगदान के लिए लगातार दो वर्षों से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,शिलांग द्वारा द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इसके लिए राजभाषा अनुभाग के कार्मिकों के साथ-साथ सभी कार्मिकों को मैं धन्यवाद देता हूँ और आप सभी से आग्रह करता हूँ कि निगम में भारत सरकार की राजभाषा नीति को बढ़ावा देने के लिए आप सभी पूरी कोशिश करें।

श्री सत्यब्रत बरगोहाईं, निदेशक (कार्मिक) हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन के दौरान संबोधित करते हुए

श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (मा.सं.) के साथ डॉ.बिजेंद्र सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए

14 सितम्बर, 2018 को हिंदी दिवस समारोह का हर्षोल्लास के साथ आयोजन किया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई थी। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री एस. बरगोहाईं, निदेशक (कार्मिक) ने किया। राजभाषा प्रदर्शनी में निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया।

सर्वप्रथम मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित डॉ. बिजेंद्र सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग ने हिंदी दिवस समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर श्री रजत शर्मा, कार्यपालक निदेशक(आरई), श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन), डॉ. बिजेंद्र सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग तथा निगम के अधिकारीगण एवं कर्मचारीवृंद बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

डॉ.बिजेंद्र सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग हिंदी दिवस समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर करते हुए

तत्पश्चात हिंदी दिवस के समारोह में मुख्य अतिथि का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया गया। हिंदी दिवस के मुख्य कार्यक्रम का शुभारंभ नीपको गीत के साथ किया गया। इस अवसर पर हिंदी पत्रिका नीपको ज्योति के 13वें अंक का भी विमोचन किया गया।

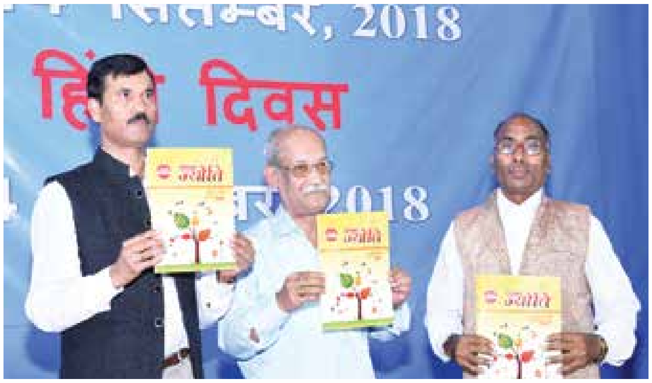

डॉ.बिजेंद्र सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग, श्री रजत शर्मा, कार्यपालक निदेशक (आरई) और श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (मा. सं.), नीपको ज्योति हिंदी पत्रिका का विमोचन करते हुए

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से प्राप्त श्री राजनाथ सिंह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के हिंदी दिवस पर दिए गए संदेश का वाचन हिंदी दिवस समारोह में श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) ने किया। श्री आर.के.सिंह, माननीय विद्युत एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), भारत सरकार के हिंदी दिवस पर की गई अपील का वाचन श्री अटल अमर प्रभात कुजूर, वरि. प्रबंधक (मानव संसाधन) ने किया। श्री पी.के.सिन्हा, मंत्रिमंडल सचिव, भारत सरकार के हिंदी दिवस पर दिए गए संदेश का वाचन सुश्री ईलाखी चांगमाई, कार्मिक अधिकारी ने किया। श्री अरूण कुमार प्रधान, सहायक प्रबंधक (हिंदी) ने निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

डॉ. बिजेंद्र सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग ने अपने संबोधन में सर्वप्रथम नीपको के मुख्यालय में हिंदी दिवस के पावन अवसर पर आमंत्रित किए जाने के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र की तरफ से नीपको, मुख्यालय, शिलांग के कार्मिकों को बधाई दी। तत्पश्चात अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी अब केवल बोल-चाल की भाषा तक सीमित नहीं है बल्कि यह बाजार, रोजगार एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी पैठ बढ़ा रही है। हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान है।

श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) ने सभागार में उपस्थित सभी कार्मिकों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति को निगम में कार्यान्वित करने में हम सभी सक्रिय हैं। निगम के मुख्यालय को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सराहनीय कार्य के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग द्वारा लगातार दो वर्षों से द्वितीय पुस्कार से पुरस्कृत किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि नीपको के कारपोरेट कार्यालय, शिलांग, समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली, गुवाहाटी, असम गैस आधारित विद्युत संयंत्र, बकुलनी, असम, एजीटीसीसीपीपी, त्रिपुरा, टीजीबीपीपी, त्रिपुरा और रंगानदी जल विद्युत संयंत्र, अरूणाचल प्रदेश से हिंदी पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। वर्ष में कम से कम एक बार निगम के नियंत्रणाधीन संयंत्र/परियोजना के कार्यालयों के मानव संसाधन प्रमुखों एवं हिंदी कार्मिकों के साथ राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेने हेतु समीक्षा बैठक मुख्यालय में की जाती है। जहाँ कहीं भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में कमियाँ पाई जाती हैं उसका निराकरण किया जाता है। हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी उन्होंने बधाई दी।

श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (मा.सं.), नीपको हिंदी दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए

श्री रजत शर्मा, कार्यपालक निदेशक (आरई) ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी दिवस के अवसर पर निगम के मुख्यालय के कार्मिकों को हिंदी में संबोधित करने का यह मेरा पहला अवसर है। आप सभी जानते हैं कि 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी एक सरल एवं सहज भाषा है। इसे सीखना चाहिए और सरकारी कामकाज में इसके प्रयोग के लिए आप सभी को प्रयास करना चाहिए।

श्री रजत शर्मा, कार्यपालक निदेशक (आरई) नीपको हिंदी दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए

1-14 सितम्बर, 2018 तक हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित वाद-विवाद, सामूहिक चर्चा, सुलख, श्रुतलेख, कविता पाठ, संगीत, अनुवाद, प्रश्नोत्तरी एवं अंताक्षरी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार देकर उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (मा.सं.), नीपको, विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए

श्री रजत चन्द्र शर्मा, कार्यपालक निदेशक (आरई),नीपको, विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए

हिंदी में नोट/टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन को बढ़ावा देने के लिए निगम में 2013 से प्रोत्साहन योजना लागू की गई है। इस वर्ष भी हिंदी दिवस समारोह में इस योजना में भाग लेनेवाले कार्मिकों को पात्रता के आधार पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। सुश्री माइस्नाम इंगलेमा, सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिंदी दिवस समारोह सम्पन्न हुआ।

श्री दिगन्त बोरा, वरि. प्रबंधक (मानव संसाधन) एवं श्री अनिल कुमार दास, उप-महाप्रबंधक (वित्त), नकद पुरस्कार प्राप्त करते हुए

दोयांग जल विद्युत संयंत्र

दोयांग जल विद्युत संयंत्र में दिनांक 01 सितम्बर, 2018 को हिन्दी पखवाड़ा का शुभारम्भ किया गया। उप-महाप्रबंधक (वै.-/यां.) श्री प्रसेन्नजीत फूकन ने प्रदीप प्रज्जवलित करके हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री जे.एन.सिंह,उप-महाप्रबंधक (मा.सं.) ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए हिन्दी राजभाषा के प्रयोग पर अधिक से अधिक बल देने का आग्रह किया।

दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दोयांग जल विद्युत संयंत्र के उप-महाप्रबंधक (वै.-/यां.) श्री प्रसेन्नजीत फूकन, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, श्री दिपुल हलोई मुख्य अतिथि श्री रुपेश कुमार सिंह, हिन्दी शिक्षक, विवेकानन्द केंद विद्यालय, दोयांग तथा संयंत्र के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बड़ी संख्या में कर्मचारीगण उपस्थत थे। श्री जे.एन. सिंह, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.) ने प्रदीप प्रज्ज्वलित करके हिन्दी दिवस समारोह के कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। श्री जे.एन. सिंह, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.) ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के संदेश को हिन्दी दिवस के समारोह में प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि श्री रुपेश कुमार सिंह, विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय, दोयांग ने हिन्दी के विभिन्न स्वरूपों पर प्रकाश डाला और कहा कि हिन्दी का प्रचार-प्रसार देश के सभी भागों में हो रहा है। मुख्य अतिथि श्री दिपुल हलोई, मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने हिन्दी दिवस समारोह में उपस्थत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार हम सब मिलकर करेंगे तभी हिन्दी राजभाषा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकती है। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को हिन्दी दिवस समारोह में आकर्षक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया।

श्री जे. एन. सिंह, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.)हिंदी दिवस के अवसर पर विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए

श्री एच. के. चांमाई, संयंत्र प्रमुख,एजीबीपी,बकुलोनी, असम समारोह का उद्घाटन करते हुए

श्री एच. के. चांमाई, संयंत्र प्रमुख,एजीबीपी,बकुलोनी, असम आरोही पत्रिका का विमोचन करते हुए

विजयी प्रतिभागी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

एजीबीपीपी

एजीबीपी कार्यालय में दिनांक 01/09/2018 से 14/09/2018 को हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान कार्मिकों में हिंदी के प्रति उनकी रूचि को बढ़ाने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। जैसाकि कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, अनुवाद, हिंदी टंकण, आकस्मिक भाषण, संगीत प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, अंताक्षरी इत्यादि। विजेताओं को 14 सितम्बर, 2018 को हिंदी दिवस समारोह के दौरान संयंत्र प्रमुख श्री एच. के. चांमाई, महाप्रबंधक (वि./या.) तथा समारोह में उपस्थित अध्यक्ष श्री रितिक चक्रवर्ती, विवेकानंदा केंद्र विद्यालय, बोकुलोनी के प्रधान अध्यापक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यालय द्वारा वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आरोही' के तृतीय अंक का अनावरण संयंत्र प्रमुख श्री एच. के.चांमाई, महाप्रबंधक (वि./या.) द्वारा किया गया। श्री रंजीत बरठाकुर, उप-महाप्रबंधक (मानव संसाधन) द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापन कर हिंदी दिवस समारोह का समापन किया गया।

पारे जल विद्युत परियोजना

पारे जल विद्युत परियोजना, नीपको, दोईमुख, अरूणाचल प्रदेश में दिनांक 01 सितम्बर, 2018 को हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया। श्री द्विजेन कुमार, उप-महाप्रबंधक(वित्त) द्वारा प्रदीप प्रज्जविलित करके हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर श्री आर.सी. तांडे, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.), श्री अभिषेक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.) सी.एस.आर., श्री आर ती.तारा, प्रबंधक (प्रशासनिक), परियोजना के विभिन्न विभाग के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित थे। प्रदीप प्रज्जवलन के बाद हिंदी की महत्व पर प्रकाश डालते हुए परियोजना के उप-महाप्रबंधक (वित्त), श्री द्विजेन कुमार ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अपने दैनिक कार्यालयीन के काम-काज में हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।

पारे जल विद्युत परियोजना, दोईमुख,अरूणाचल प्रदेश में हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेनेवाले प्रतिभागियों के साथ अधिकारीगण

श्री आर.सी.तांडे, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.) ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए हिंदी के महत्व को बताया एवं कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। श्री अभिषेक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.) सी.एस.आर. ने अपने संबोधन में कहा कि हमें अपने दैनिक सरकारी काम-काज में सरल व सहज छोटी-छोटी टिप्पणियाँ लिखने तथा हिंदी में हस्ताक्षर करने का पूरा प्रयास करना चाहिए। श्री आर.ती. तारा, प्रबंधक (प्रशासनिक) ने अपने संबोधन में राजभाषा हिदी को एक सरल सहज आम लोगों की भाषा बताया और यह भी कहा कि सभी भाषाओं का सम्मान करते हुए हमें अपने कार्यालय के दैनिक कार्य हिंदी में करने का पूरा प्रयास करना चाहिए।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं जैसे-समाचार वाचन, कविता पाठ, टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन, अनुवाद, आकस्मिक भाषण, संगीत, अंताक्षरी तथा प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। हिंदी दिवस का मुख्य समारोह 14 सितम्बर, 2018 को नीपको, सभाकक्ष (कांफ्रेस हॉल) में मनाया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री आर.सी. तांडे, वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.) थे। श्रीमती फेसिया खारबुली, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने मुख्य अतिथि तथा उपस्थित सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए हिंदी को सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक अपनाने का अनुरोध किया। दीप प्रज्जवलन के उपरांत परियोजना के वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.),श्री आर.सी.तांडे ने सभी को हिंदी दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आप अपने कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करें, ताकि राजभाषा विभाग के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को पूरा किया जा सके। श्रीमती नबम रेखा, वरिष्ठ संपर्क सहायक द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी के संदेश एवं माननीय विद्युत राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) की ओर से भेजी गई अपील का पाठ किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को हिंदी दिवस समारोह में पुरस्कृत किया गया। श्रीमती फेसिया खारबुली, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

हिंदी दिवस के अवसर पर प्रतिभागी पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अभिषेक कुमार, वरि.प्रबंधक(मा.सं.) सी.एस.आर. विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए

रंगानदी जल विद्युत संयंत्र

रंगानदी जल विद्युत संयंत्र में दिनांक 01 सितम्बर 2018 से 14 सितम्बर 2018 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे हिंदी टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन, हिंदी अनुवाद,हिंदी टंकण,आकस्मिक भाषण,समाचार वाचन, संगीत और अंताक्षरी आयोजित की गई।

हिंदी दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 14.09.2018 को रंगानदी जल विद्युत संयंत्र के सभागार कक्ष में किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों तथा अन्य उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत श्री तरूण कुमार, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, मानव संसाधन विभाग, रेहप तथा रंगानदी जल विद्युत संयंत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तरफ से किया गया। इस अवसर पर राजभाषा वार्षिक पत्रिका – पंयोर प्रवाह के ग्यारहवें अंक का विमोचन संयंत्र प्रमुख के कर कमलों द्वारा किया गया।

हिंदी दिवस के अवसर पर पंयोर प्रवाह पत्रिका का विमोचन

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को संबोधित करते हुए अपने अभिभाषण में संयंत्र प्रमुख ने हिंदी दिवस पर सबको बधाई देते हुए कहा कि ' 'हिंदी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है ?' ' संयंत्र प्रमुख ने हिंदी दिवस की महता पर भी प्रकाश डाला और सभी कर्मचारियों से यह भी कहा कि भविष्य में रंगानदी जल विद्युत संयंत्र में हिंदी द्वारा सभी को एक दूसरे से जोड़ दिया जाए ताकि निकट भविष्य में अधिक से अधिक राजभाषा का व्यवहार इस संयंत्र में होने लगे। अंत में हिंदी दिवस 2018 के इस पाक्षिक समारोह का समापन श्री तरूण कुमार, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

हिंदी दिवस के अवसर पर प्रतिभागी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

कोपिली जल विद्युत संयंत्र

कोपिली जल विद्युत संयंत्र में दिनांक 01 सितम्बर, 2018 से 14 सितम्बर, 2018 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कोपिली जल विद्युत संयंत्र, नीपको के संयंत्र प्रमुख, श्री डी. भट्टाचार्जी ने प्रदीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे समाचार वाचन, टिप्पण और प्रारूप लेखन, अनुवाद, आकस्मिक भाषण, संगीत प्रश्नोत्तरी, टंकण और अंताक्षरी आयोजित की गई। इन कार्यक्रमों का संचालन सहा. प्रबंधक (हिंदी), श्री बिशन थापा द्वारा किया गया। कोपिली जल विद्युत संयंत्र नीपको लि., उमरॉग्सों, असम ने दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को हिंदी दिवस के समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री डी. भट्टाचार्जी, संयंत्र प्रमुख ने प्रदीप प्रज्जवलित कर किया। तत्पश्चात श्री बिशन थापा, सहा. प्रबंधक (हिंदी) ने श्री डी. भट्टाचार्जी, संयंत्र प्रमुख, श्री एमसी. दिहिंग्या, उप महाप्रबंधक (सी), श्री रंदीप चांगकाकोती, वरि. प्रबंधक (मा.सं.) तथा समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि श्री डी.भट्टाचार्जी, संयंत्र प्रमुख ने अपने संबोधन में सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि कार्यालयीन कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें और खेप, नीपको, उमरॉग्सों में हिंदी के प्रयोग को बढाने हेतु अपना योगदान दें। हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी पत्रिका 'कोपिली दर्पण' के प्रथम अंक का विमोचन श्री डी.भट्टाचार्जी, संयंत्र प्रमुख, खेप, उमरॉग्सों द्वारा किया गया।

श्री देबोतोष भट्टाचार्जी,संयंत्र प्रमुख,प्रदीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए

श्री देबोतोष भट्टाचार्जी, संयंत्र प्रमुख, पत्रिका का विमोचन करते हुए

श्री देबोतोष भद्टाचार्जी, संयंत्र प्रमुख, पुरस्कार प्रदान करते हुए

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को हिंदी दिवस समारोह में आकर्षक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। श्री बिशन थापा ने हिंदी दिवस के मुख्य समारोह का संचालन किया। श्री हिरेन चंद्र कलिता, सहा. प्रबंधक (सी) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही हिंदी दिवस समारोह सम्पन्न हुआ।

वाह उमियम चरण-3 जल विद्युत परियोजना

वाह उमियम चरण-3 जल विद्युत परियोजना, मावसिनराम में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस का आयोजन 01 सितम्बर से 14 सितम्बर तक किया गया। इस आयोजन में परियोजना के सभी अधिकारिगण तथा कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। इस पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया तथा हिंदी दिवस 14 सितम्बर 2018 को विजेताओं को महाप्रबंधक के हाथों से पुरस्कारों का वितरण किया गया। इस प्रकार हिंदी दिवस बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया।

हिंदी दिवस के अवसर पर प्रतिभागी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

तुईरियल जल विद्युत संयंत्र

तुईरियल जल विद्युत संयंत्र में हिंदी पखवाड़ा 01 सितम्बर, 2018 से 14 सितम्बर,2018 तक बड़े उत्साह से मनाया गया। इसके दौरान विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की गई, जिनमें परियोजना के विभिन्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री समरजित चक्रवर्ती, संयंत्र प्रमुख ने संयंत्र के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक काम करने पर जोर दिया, जिससे की सरकार द्वारा निर्धारित 'ग' क्षेत्रों के लक्ष्यों को प्राप्त किया सके। हिंदी दिवस समारोह में विजयी प्रतिभागियों को श्री समरजित चक्रवर्ती, संयंत्र प्रमुख ने पुरस्कृत किया। समारोह का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री अजय कुमार वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं.) ने किया।

श्री समरजित चक्रवर्ती, संयंत्र प्रमुख प्रदीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए

संयंत्र प्रमुख के साथ सामूहिक तस्वीर में प्रतिभगीगण

कामेंग जल विद्युत परियोजना

कामेंग जल विद्युत परियोजना, किमि (अ.प्र.) में दिनांक 01 सितम्बर से 14 सितम्बर 2018 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान हिंदी टिप्पण व प्रारूप लेखन, आकस्मिक भाषण, हिंदी समाचार वाचन, हिंदी अनुवाद, टंकण प्रतियोगिता, संगीत प्रतियोगिता, प्रशनोत्तरी प्रतियोगिता एवं अंताक्षरी आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस समारोह का आयोजन 14 सितम्बर, 2018 को किया गया। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री नवेन्दु शुक्ला वैद्य, प्रभारी परियोजना प्रमुख, काहेप, किमि, अरूणाचल प्रदेश द्वारा किया गया। श्रीमती सम्प्रीति मधुकूल्या सहा.प्रबंधक, मा.सं. ने स्वागत भाषण करते हुए सर्वप्रथम समारोह के मुख्य अतिथि तथा सभा में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि नवेन्दु शुक्ला वैद्य, प्रभारी परियोजना प्रमुख ने अपने सम्बोधन में हिंदी को एक सरल सहज तथा आम लोगों की भाषा बताते हुए हिंदी को पूरे भारत में सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा बताते हुए हिंदी को सभी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा सरकारी कामकाज में अपनाने का आग्रह किया। समारोह में श्रीमती बाजीम जेबिसो व श्रीमती नाना सोरीसो समूह ने हिंदी में गाना गाकर सभी का मनोरंजन किया और समारोह की शोभा बढ़ाई। श्री ऑनी आपुम, वरि. प्रबंधक (मा.स.) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन किया गया।

हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

विजयी प्रतिभागी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली

समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली में 01 सितम्बर से हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। पखवाड़े के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दो वर्गों में (हिंदी भाषी एवं अन्य भाषा-भाषी) राजभाषा हिंदी की चार प्रतियोगिताएं (तात्कालिक भाषण, प्रश्नोत्तरी, टिप्पण और प्रारूप लेखन तथा अनुवाद) आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 14 सितम्बर, 18 को हिंदी दिवस का मुख्य समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष महोदय के कर-कमलों से हिंदी की गृहपत्रिका ''रतनदीप'' के पांचवे अंक का विमोचन किया गया।

श्री एच. भराली, कार्यालय प्रमुख हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर करते हुए

हिंदी पखवाड़ा के दौरान टिप्पण और प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागी

श्री एच. भराली,कार्यालय प्रमुख रतनदीप पत्रिका का विमोचन करते हुए

गुवाहाटी कार्यालय

दिनांक 01 सितम्बर, 2018 से 14 सितम्बर, 2018 तक गुवाहाटी कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान हिंदी टिप्पणी व प्रारूप लेखन, अनुवाद, हिंदी आकस्मिक भाषण, हिंदी संगीत, हिंदी प्रश्नोत्तरी तथा हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस का मुख्य समारोह का आयोजन 14 सितम्बर, 2018 को किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री धीरज लाल, सहायक निदेशक,हिंदी शिक्षण योजना, मालीगांव, गुवाहाटी थे। श्रीमती कबिता दास, वरि. प्रबंधक (मानव संसाधन) ने स्वागत भाषण में सर्वप्रथम समारोह के मुख्य अतिथि, सभापति तथा सभा में उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत करते हुए हिंदी को सरकारी काम-काज में ज्यादा से ज्यादा अपनाने का अनुरोध किया। इस अवसर पर श्री संजीव बरूआ, कार्यपालक निदेशक(डीएण्डई), श्री समीरन गोस्वामी, महाप्रबंधक (सी) परियोजना तथा उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने विचार व्यक्त किये। हिंदी प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को श्री संजीव बरूआ, कार्यपालक निदेशक (एस एण्ड आई) और श्री धीरज लाल, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, मालीगांव, गुवाहाटी और कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

मुख्य अतिथि श्री धीरज लाल महोदय ने अपने संबोधन में हिंदी को एक सरल,सहज और आम लोगों की भाषा बताया। उनके अनुसार हिंदी विभिन्न भाषा रूपी फूलों को लेकर एक माला बनाने का कार्य करती हैं। अब हम सब का कर्तव्य है कि इसे सरकारी काम-काज में लाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। श्रीमती कविता दास, वरि. प्रबंधक, मानव संसाधन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

टीजीबीपीपी

त्रिपुरा गैस आधारित विद्युत संयंत्र, कायार्लय में दिनांक 01 सितम्बर, 2018 से 14 सितम्बर, 2018 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया और 14 सितम्बर, 2018 को हिंदी दिवस मनाया गया। त्रिपुरा गैस आधारित विद्युत संयंत्र में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देते हुए 'आलोक ज्योति' हिंदी पत्रिका के द्वितीय संस्करण का विमोचन किया गया। हिंदी पत्रिका के इस द्वितीय संस्करण का विमोचन श्री संजय कृष्णा दे, महाप्रबंधक (वि./यां.)/ संयंत्र प्रमुख के कर कमलों द्वारा दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को हिंदी दिवस कार्यक्रम के शुभ अवसर पर टीजीबीपीपी, नीपको, मोनारचक, सोनामुड़ा, त्रिपुरा में श्री देबेन चन्द्र दास, उप-महाप्रबंधक (वि./यां.) एवं वरि. प्रबंधक (मा.सं.) टीजीबीपीपी, आदि की उपस्थिति में किया गया।

श्री संजय कृष्णा दे,संयंत्र प्रमुख,कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर करते हुए

श्री संजय कृष्णा दे,संयंत्र प्रमुख,आलोक ज्योति पत्रिका का विमोचन करते हुए

संयंत्र प्रमुख ने कहा कि '' आलोक ज्योति'' पत्रिका के द्वितीय संस्करण का विमोचन करने पर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। यह हम सबके लिए एक गर्व की बात है कि त्रिपुरा गैस आधारित विद्युत संयंत्र से हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं आप सभी को पत्रिका का प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं ''आलोक ज्योति'' हिंदी पत्रिका की उज्जवल भविष्य की शुभकामनायें देता हूँ।

श्री देबेन चन्द्र दास, उप-महाप्रबंधक (वि./यां.) ने अपने संबोधन में कहा इस क्षेत्र हिंदी पत्रिका का प्रकाशन एक राजभाषा हिंदी के प्रति एक सराहनीय कदम है। आशा करता हूं कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी की प्रगति में अपना सफल योगदान प्रदान करेगी।

एजीटीसीसीपीपी

अगरतला गैस टरबाइन कंबाइंड साइकिल पॉवर प्लांट में दिनांक 01 से 14 सितंबर 2018 तक हिंदी पखवाड़ा पूरे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। समारोह का उदघाटन अनेक वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में संयंत्र श्री संजय कृष्ण दे, महाप्रबंधक (वै./यां) द्वारा प्रदीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संयंत्र प्रमुख महोदय ने अपने भाषण में एजीटीसीसीपीपी में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्यों की सराहना की और उन्होने सभी को मिलकर इसे और बढ़ाने का आग्रह किया। उन्होने प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को उत्साहित करने के साथ-साथ कार्यक्रम की सफलता की शुभकामनाएँ दीं। इस पखवाड़े के दौरान प्लांट के कर्मचारियों को हिंदी के प्रयोग के लिए उत्साहित करने हेतु टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, संगीत प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, आकस्मिक भाषण प्रतियोगिता, समाचार वाचन प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता आदि आयोजित की गई थीं, जिसमें बहुत संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके अलावा कर्मचारियों के बच्चों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से बच्चों के बीच अंताक्षरी प्रतियोगिता भी आजोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर अगरतला की मशहूर कवियत्री श्रीमती सुमिता धर बसु ठाकुर को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। इस समारोह में उन्होने हिंदी भाषा और मातृभाषा का हमारे जीवन में महत्व पर अनेक कविता पाठ की।

हिन्दी दिवस के अवसर पर एजीटीसीसीपीपी, नीपको की राजभाषा कार्यान्वयन की वार्षिक रिपोर्ट **'प्रगति और प्रयास'** का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री नीलमाधव बनिक, कार्यपालक सचिव द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी के संदेश और माननीय विद्युत एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) की अपील

का पाठ किया गया। समारोह के दौरान अनेक कर्मचारियों ने अपना वक्तव्य रखा। अंत में श्री महेश कुमार शर्मा, सहायक हिंदी अधिकारी द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

पुरस्कार :
असम गैस आधारित विद्युत संयंत्र

राजभाषा पुरस्कार योजना के तहत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) मुख्यालय, ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान (असम) द्वारा दिनांक 26/10/2018 को आयोजित एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम ''राजभाषा संवाद'', श्री बदरी यादव, अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन), एवं कार्यालय प्रमुख क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), गुवाहाटी की उपस्थिति में एजीबीपीपी, नीपको, बोकुलोनी को वर्ष 2017-18 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। जिसके लिए पुरस्कार स्वरूप कार्यालय को राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया। पुरस्कार श्री एच.के.चांमाई, महाप्रबन्धक (वैद्युत/यांत्रिक) एवं संयंत्र प्रमुख, एजीबीपीपी द्वारा प्राप्त किया गया साथ में श्री रंजीत बरठाकुर, उप-महाप्रबंधक (मानव संसाधन), एजीबीपीपी थे। कार्यक्रम के तृतीय और अंतिम सत्र में नराकास की प्रतिष्ठित राजभाषा शील्ड एवं हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया जिसमें एजीबीपीपी के कार्मिकों ने भी सहर्ष रूप से भाग लिया और विजयी रहे।

कारपोरेट मुख्यालय, शिलांग

वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा के कार्यान्वयन में सराहनीय कार्य के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), शिलांग द्वारा शील्ड योजना के तहत नराकास के सभी सदस्य कार्यालयों में नीपको के कारपोरेट मुख्यालय को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। दिनांक 11.06.2019 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), शिलांग की बैठक में नीपको के कारपोरेट मुख्यालय को तृतीय पुरस्कार स्वरूप शील्ड और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

ब्रिगेडियर ऋतुराज रैना, एसएम, वीएसएम, ब्रिगेडियर(जीएस), महानिदेशालय असम राइफल्स,शिलांग से शील्ड प्राप्त करते हुए श्री बी.के.तिग्गा, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.) रा.भा.,नीपको, शिलांग साथ में श्री अरूण कु. प्रधान, उप-प्रबंधक(हिंदी)

गुवाहाटी कार्यालय

निगम के गुवाहाटी कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) गुवाहाटी ने दिनांक 14.12.2018 को गुवाहाटी कार्यालय को सर्वोत्कृष्ट गृह पत्रिका (नीपको तरंग) को चतुर्थ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली

दिनांक 25.02.2019 को नराकास, दिल्ली, उपक्रम-2 की चतुर्थ बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में वर्ष 2018-19 के लिए नीपको, नई दिल्ली समन्वय कार्यालय को 'रतनदीप' पत्रिका के लिए तृतीय पुरस्कार तथा नराकास, सम्मेलन के दौरान 'प्रदर्शनी' लगाने एवं 'दोहा पाठ प्रतियोगिता' के आयोजन हेतु शील्ड प्रदान की गई। श्री एच भराली, कार्यालय प्रमुख तथा सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी ने इसे प्राप्त किया। इसी श्रृंखला में नराकास के तत्वावधान में आयोजित क्विज प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर श्री राजीव रंजन, प्रबंधक (आई.टी.) को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र तथा सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी को राजभाषा क्रियान्वयन में योगदान के लिए प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

निगम में अयोजित हिंदी कार्यशालाओं पर अद्यतन रिपोर्ट

नीपको मुख्यालय, शिलांग

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड के मुख्यालय, शिलांग में 19 जून, 2019 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में श्री एस.एल. दुवरा, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री बी. के. तिग्गा, उप-महाप्रबंधक(मानव संसाधन),राजभाषा के साथ-साथ संकाय सदस्य के रूप में श्रीमती असितकमल,वरि.हिन्दी अनुवादक,महानिदेशालय असम राइफल्स,लाइटकोर,शिलांग उपस्थित थीं। कार्यशाला में उपस्थित सभी वरिष्ठ अधिकारियों और संकाय सदस्य तथा

कार्यशाला में भाग लेनेवाले प्रतिभागियों का उप-प्रबंधक (हिन्दी), श्री अरूण कुमार प्रधान ने स्वागत किया।

इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री एस.एल. दुवरा,महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने किया। कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक तिमाही में आपके लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है और हमारा यह प्रयास रहता है कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग के दिशा निदेश अनुसार हिंदी कार्यान्वियन के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जाय एवं इसका पालन करते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्य में सक्षम बनाया जाय। उन्होनें यह भी कहा कि आपके बीच संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्रीमती असित कमल जी से कार्यालय में हिंदी के प्रयोग से संबंधित पूरी जानकारी प्राप्त करें तथा इस तरह की कार्यशालाओं से आप सभी लाभ उठाएं और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें। इस कार्यशाला में हिंदी का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात आप प्रतिदिन के कार्यालयीन कार्य में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने की कोशिश करें जिससे इस कार्यशाला की सार्थकता सिद्ध हो सके। संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्रीमती असित कमल जी ने कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को राजभाषा विभाग,भारत सरकार की राजभाषा नीति, नियम से अवगत कराया। तत्पश्चात, उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग पर प्रकाश डाला। फिर कार्यालयीन प्रयोग हेतु हिंदी में टिप्पणी और प्रारूप लेखन का अभ्यास कराया। इस प्रकार एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला संपन्न हुई।

इसके अतिरिक्त मुख्यालय में दिनांक 27.03.2019, 05.12.2018 एवं 26.09.2018 को आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशालाओं की तस्वीर।

श्री एस.एल. दुवरा, उप-महाप्रबंधक(मानव संसाधन) हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए

श्री विनोद कुमार मिश्रा, प्रध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, शिलांग, प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान करते हुए

श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (मा.सं.) कार्यशाला के उदघाटन सत्र में संकाय सदस्य एवं प्रतिभागियों के बीच

श्री राकेश रंजन मिश्रा, संकाय सदस्य प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली

समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 17.05.19 को 'एक कदम और राजभाषा की ओर' मिशन के तहत 'हिंदी वर्तनी' विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वक्ता के रूप में डॉ0 शोभा रानी, उप निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना/केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान जो कि वर्तमान में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय) में प्रतिनियुक्ति पर प्रबंधक (राजभाषा) हैं उनको आमंत्रित किया गया। कार्यशाला के आरंभ में सहायक हिंदी अधिकारी, सुश्री सुनीता रानी सिन्हा ने प्रबंधक (राजभाषा) महोदया एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया और प्रबंधक (राजभाषा) महोदया से कार्यशाला को प्रारंभ करने के लिए आग्रह किया। कार्यशाला का प्रारंभ करते हुए प्रबंधक (राजभाषा) महोदया ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी संघ की राजभाषा है और हिंदी वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता रखने के लिए ही हिंदी का मानक रूप निर्धारित किया

नई दिल्ली में आयोजित अन्य कार्यशालाओं की तस्वीर

गया। उन्होंने वर्णमाला के पुराने रूप और मानक रूप को विस्तार पूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है जिसका दूसरा पक्ष वर्तनी है, जिसे लिखने के तरीके को उन्होंने बड़े ही तर्कपूर्ण ढ़ग से समझाया, सभी प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाया और इसे बहुत ही उपयोगी बताया। इस कार्यशाला में 05 अधिकारियों और 10 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के समापन पर सहायक हिंदी अधिकारी ने सभी को धन्यवाद देते हुए प्रबंधक (राजभाषा) महोदया का आभार प्रकट किया।

एजीबीपीपी, असम

हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कार्मिकों के लिए तथा अधिकारियों को अपना दैनिक कार्यालयीन काम हिंदी में करने के लिए और अधिक सक्षम बनाने के उद्देश्य से कार्यालय एजीबीपी नीपको बोकुलोनी में दिनांक 25.06.2019 को एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गयी कार्यशाला का शुभारंभ संयंत्र प्रमुख श्री एच. के.चामाई, मुख्य महाप्रबंधक (वि./यां) द्वारा अतिथि वक्ता को फुलम गमोचा से स्वागत कर सभी प्रशिक्षणाथियों को संबोधित कर किया गया। कार्यक्रम में अतिथि संकाय के तौर पे श्री संजय श्रीवास्तव, विवेकानंद केंद्र विद्यालय के हिंदी प्राध्यापक, को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में कुल 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला पूर्ण रूप से अभ्यास आधारित था। प्रशिक्षणार्थियों को अभ्यास कार्य दिये गए जिसे हल करते वक्त उनके द्वारा पाये गए कठिनाईयों पर पूरा सत्र आधारित किया गया। प्रत्येक प्रशिक्षुओं के कठिनाईयों को पर गौर किया गया, उनका समाधान किया गया और उन पर विस्तार रूप से चर्चा भी की गयी। इस प्रकार, प्रशिक्षणार्थी अपने दैनिक कार्य में हिंदी को

सचेत रूप से प्रयोग कर पायेंगे ये ही एक मात्र उद्देश्य के साथ अभ्यास कार्य को महत्व दिया गया। इससे सभी प्रशिक्षणार्थियों को कॉफी लाभ हुआ। सभी प्रशिक्षणार्थी काफी फुर्ती एवं उत्साह के साथ इस कार्यशाला में शामिल रहे। उनकी हिंदी से जुड़ी कई शंकाएँ दूर हुई और इस सत्र से उन्होंने काफी कुछ सीखा और ज्ञान प्राप्त की। कार्यक्रम के दौरान यह सुनिश्चित किया गया कि किसी भी रूप से प्लास्टिक उत्पाद का प्रयोग नहीं की जाए और उनके बदले मिट्टी के बर्तनों का उपयोग किया गया। यह प्लास्टिक मुक्त वातावरण कार्यान्वयन से अधीन पालन किया गया। अंत में मानव संसाधन विभाग की ओर से वरिष्ठ प्रबन्धक श्रीमती संजना मेधी गोस्वामी द्वारा उपस्थित अतिथि संकाय श्री संजय श्रीवास्तव व संयंत्र प्रमुख, एच. के. चांमाई मुख्य महाप्रबंधक सभी प्रशिक्षणार्थीयों को धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यशाला का समापन किया।

दिनांक 15.11.2018 को आयोजित हिंदी कार्यशाला की तस्वीर

दोयांग जल विद्युत संयंत्र, नागालैंड

दोयांग जल विद्युत संयंत्र, नीपको लिमिटेड, नागालैंड में दिनांक 26.06.2019 को अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री प्रसेनजित फूकन, प्रभारी संयंत्र प्रमुख, श्री सोनोवाल, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (मा.सं.) एवं संकाय सदस्य के रूप में विवेकानन्द केंद्र विद्यालय ढेप, नागालैंड के हिंदी शिक्षक श्री रूपेश कुमार सिंह को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में उपस्थित सभी वरिष्ठ अधिकारियों और संकाय सदस्य तथा कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों को श्री पिंटु सिंह, सहायक- ।।। (हिंदी), ने स्वागत किया। संयंत्र प्रमुख द्वारा दीप प्रज्जविलत करके हिंदी कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया।

श्री प्रसेनजित फूकन, प्रभारी संयंत्र प्रमुख, ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि संकाय सदस्य के रूप में उपस्थित श्री रूपेश कुमार जी से कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग कैसे किया जाय इनसे आप सभी लोग सीखें और हिंदी कार्यशाला का पूरा लाभ उठाएं।

तत्पश्चात हिंदी शिक्षक, श्री रूपेश कुमार सिंह ने कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों को अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने एवं हिंदी में हस्ताक्षर करने का अभ्यास कराया तथा राजभाषा के सम्बन्ध में विशेष जानकारी उपलब्ध कराई। उन्होंने यह भी कहा कि आप जितना अधिक हिंदी के प्रयोग करने का अभ्यास करेंगे उतना ही हिंदी के प्रयोग में आगे बढ़ेंगे। इस प्रकार एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला संपन्न हुई।

टीजीबीपीपी

त्रिपुरा गैस आधारित विद्युत संयंत्र, मोनारचक, त्रिपुरा में दिनांक 20.07.2019 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन सत्र में श्री संजय कृष्णा दे, मुख्य महाप्रबंधक (वै./यां.) संयंत्र प्रमुख एवं अतिथि संकाय के रूप में श्री मुनीन्द्र मिश्रा, हिंदी अधिकारी, त्रिपुरा विश्वविद्यालय उपस्थित थे। कार्यशाला में उपस्थित संयंत्र, प्रमुख, अतिथि संकाय एवं कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों का श्री विजय कुमार, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.) द्वारा स्वागत किया गया।

दिनांक 28.03.19 व 28.12.18 को आयोजित हिंदी कार्यशाला

श्री संजय कृष्णा दे, मुख्य महाप्रबंधक (वै./यां.) संयंत्र प्रमुख ने कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी एक सरल और सहज भाषा है। उन्होंने यह भी निवेदन किया कि हिंदी में सरकारी काम करने में आप लोगों को जो भी असुविधा हो रही हैं उसे इस कार्यशाला में उपस्थित अतिथि संकाय श्री मुनीन्द्र मिश्रा, हिंदी अधिकारी, त्रिपुरा विश्वविद्यालय के समक्ष रखें और उसका निवारण करें।

अतिथि संकाय के रूप में आमंत्रित श्री मुनीन्द्र मिश्रा, हिंदी अधिकारी ने एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला के दौरान उपस्थित सभी प्रतिभागियों को हिंदी टंकण में गलतियाँ या अशुद्धियाँ होने पर विशेष रूप से बताया ताकि भविष्य में होने वाली टंकण के दौरान होने वाली गलतियों से बचा जा सके। उसके बाद उन्होंने हिंदी शिक्षण योजना में प्रशिक्षण के बारे में बताया और कहा कि जो भी प्रशिक्षण के लिए शेष है उनको चरणबद्ध तरीके से प्रशिक्षण दिया जाए। अंत में समापन सत्र में श्री विजय कुमार, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.) द्वारा अतिथि संकाय एवं उपस्थित प्रतिभागियों का कार्यशाला को सफल बनाने के लिए उनका आभार प्रकट किया और कार्यशाला सम्पन्न हुआ।

गुवाहाटी कार्यालय

निगम के गुवाहाटी स्थित कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 28.06.2019 को एक दिवसीय राजभाषा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्याशाला में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में विभिन्न विषयों पर चर्चा व अभ्यास कराया गया। अभ्यास के दौरान हिंदी में आवेदन पत्र तथा लेख पर परीक्षा ली और बाद में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान की घोषणा की। श्री बदरी यादव, अनुसंधान अधिकारी, क्षेत्रीय हिंदी कार्यान्वयन (पूर्वोत्तर), राजगड रोड, गुवाहाटी, को संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में संकाय सदस्य तथा इसमें भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत श्रीमती कबिता दास, उप-प्रबंधक (मा.सं.) तथा धन्यवाद ज्ञापन भी किया।

कोपिली जल-विद्युत संयंत्र

कोपिली जल-विद्युत संयंत्र, नीपको लि., उमरॉग्सो में दिनांक 21.06. 2019 को एक दिवसीय राजभाषा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजभाषा (हिंदी) कार्यशाला का उद्घाटन श्री आर. चांगकोकोती, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.), खेप, उमरॉग्सो ने किया। इस अवसर पर श्री आर. चांगकाकोती, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री गौतम कुमार, सहा. प्रबंधक(सी.) एवं प्रशिक्षणार्थियों का श्री बिशन थापा, उप-प्रबंधक (हिंदी) ने स्वागत किया। श्री आर. चांगककोती, उप-महाप्रबंधक (मा. सं.) ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी कार्यशाला आयोजित करने का उद्देश्य आप सभी को हिंदी में कार्य करने में होने वाली झिझक को दूर करने लिए किया जा रहा है। आप सभी इस हिंदी कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाएं और हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें। कार्यशाला में संकाय सदस्य के रूप में श्री गौतम कुमार, सहा.प्रबंधक (सी.) को आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में 10 अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया। अंत में श्री गौतम कुमार, सहा. प्रबंधक (सी.) खेप, उमरॉग्सो एवं सभी प्रशिक्षाणार्थियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई।

दिनांक 08.04.19 व 29.12.18 को आयोजित हिंदी कार्यशाला

एजीटीसीसीपीपी, अगरताला

अगरतला गैस टरबाइन कंबाइंड साइकिल पॉवर प्लांट में दिनांक 28 जून, 2019 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 14 (चौदह) अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया।

सर्वप्रथम श्री महेश कुमार शर्मा, सहायक हिंदी अधिकारी ने प्रभारी संयंत्र प्रमुख श्री नन्द बसुमतारी, महाप्रबंधक (वै./यां.) श्रीमती एलबीन दीपिका दोले, उप-महाप्रबंधक (मा.सं.) एवं अतिथि संकाय श्री मुनीन्द्र मिश्र, हिंदी अधिकारी, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला तथा उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के उदघाटन सत्र में श्री नन्द बसुमतारी, महाप्रबंधक (वै./यां.) ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए इस कार्यशाला में अपने दैननदिन कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग में आ रही कठिनाईयों पर संकाय सदस्य श्री मिश्र से चर्चा कर उसका समाधान करने का आदेश दिया एवं कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ दी। तत्पश्चात अतिथि संकाय श्री मुनीन्द्र मिश्र ने प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया। इस कार्यशाला में उन्होंने प्रशिक्षुओं से वर्तनी और व्याकरण संबंधी अशुद्धियों आदि पर चर्चा की और महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। अंत में अतिथि संकाय एवं उपस्थित समस्त प्रशिक्षुओं को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यशाला का सफलता पूर्वक समापन किया गया।

पारे जल विद्युत संयंत्र

पारे जल विद्युत संयंत्र, नीपको लि., दोईमुख में दिनांक 29 मार्च, 2019 को ''एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथि श्री दिलीप कुमार बैश्य, संयंत्र प्रमुख ने की। उद्घाटन सत्र के दौरान सभी विभागाध्यक्ष एवं संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित श्री ज्ञानेश्वर मिश्र, हिंदी अध्यापक, विवेकानंद केंद्र विद्यालय, निर्जुली, अरूणाचल प्रदेश उपस्थित थे। कार्यशाला में भाग लेनेवाले प्रतिभागियों का मो. शाकिर हुसैन अंसारी, कार्यपालक पर्यवेक्षक ने स्वागत किया। मुख्य अतिथि, संयंत्र प्रमुख महोदय जी ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्यों की सराहना की और साथ ही हिंदी को सरकारी काम-काज में ज्यादा से ज्यादा अपनाने का अनुरोध किया। उन्होंने सभी से अपील की कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को कार्यालय में बढ़ावा देने के लिए सभी मिल कर प्रयास करें। इस अवसर पर पारे जल विद्युत संयंत्र के वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), सीएसआर श्री अभिषेक कुमार ने हिंदी के विभिन्न स्वरूपों पर प्रकाश डाला एवं सभी से अनुरोध किया कि आप सब अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करें, ताकि राजभाषा विभाग के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को पूरा किया जा सके।

तत्पश्चात श्री ज्ञानेश्वर मिश्र जी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को हिंदी व्याकरण संबंधित विषयों पर प्रकाश डाला एवं कार्यालयीन प्रयोग हेतु हिंदी में टिप्पण, प्रारूपण लेखन आदि का अभ्यास कराया। हिंदी कार्यशाला के दौरान सभी प्रशिक्षुओं को एक एक दिवभाषी लीफ -लेट प्रदान किया गया ताकि उन्हें हिंदी के प्रयोग में आसानी हो सके। इस कार्यशाला में कुल 15 कर्मचारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। अंत में मुख्य अतिथि एवं उपस्थित प्रशिक्षुओं को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यशाला का सफलता पूर्वक समापन किया गया।

उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 20.05.2019 से 24.05.2019 तक आयोजित उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री अरूण कुमार प्रधान, सहायक प्रबंधक (हिंदी), कारपोरेट कार्यालय, शिलांग ने भाग लिया। केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक डॉ. एस. एन. सिंह ने सभी प्रशिणार्थियों को प्रशिक्षण उपरान्त प्रमाण पत्र प्रदान किए।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

नीपको मुख्यालय, शिलांग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चतुर्थ बैठक दिनांक 15 मार्च, 2019 को नीपको के सम्मेलन कक्ष - । में आयोजित की

गई। यह वर्ष 2018-19 की अंतिम बैठक थी। सर्वप्रथम श्री अनिल कुमार, निदेशक (कार्मिक), नीपको, शिलांग तथा समिति के अन्य सदस्यों का इस बैठक में श्री अरूण कुमार प्रधान, सहायक प्रबंधक (हिंदी) ने हार्दिक स्वागत किया। इसके पश्चात श्री अनिल कुमार, निदेशक (कार्मिक), जो नीपको मुख्यालय, शिलांग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष हैं, की अनुमति से बैठक में चर्चा आरंभ हुई। सहायक प्रबंधक (हिंदी) ने पिछली बैठक के कार्यवृत्त पर मद अनुसार अनुपालनात्मक रिपोर्ट से समिति के अध्यक्ष महोदय तथा अन्य सदस्यों को अवगत कराया। विस्तृत चर्चा के बाद सर्वसम्मति से पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की गई। यह वर्ष 2018-19 की अंतिम बैठक होने के कारण समिति के अध्यक्ष महोदय द्वारा इस निगम के नियंत्रणाधीन संयंत्र एवं परियोजना के कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं दिशा-निदेशों के अनुपालन के संबंध में किए गए कार्यों की समीक्षा की गई। इसके पश्चात निदेशक (कार्मिक) महोदय, नीपको, शिलांग ने सहायक प्रबंधक (हिंदी) को निदेश दिया कि वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम को नीपको, मुख्यालय, शिलांग के साथ-साथ इसके नियंत्रणाधीन सभी संयंत्र एवं परियोजना के कार्यालयों में इसे परिचालित किया जाय और उनसे यह भी कहा जाय कि इस वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की पूरी कोशिश की जाय। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ यह बैठक सम्पन्न हुई।

समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली में विशेष राजभाषा कार्यक्रम

राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा कार्मिकों के लेखन को बढ़ावा देने के लिए नीपको, नई दिल्ली कार्यालय में दिनांक 26.06.2019 को हिंदी श्रुत

लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया । यह प्रतियोगिता हिंदी भाषी एवं अन्य भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए दो वर्गों में आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में कुल 10 कार्मिकों ने भाग लिया ।

हिंदी दोहा पाठ प्रतियोगिता

नार्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (नीपको) के नई दिल्ली स्थित समन्वय कार्यालय द्वारा नराकास दिल्ली उपक्रम-2 के तत्वाधान में दिनांक 28.11.2018 को स्कोप, लोधी रोड, नई दिल्ली के मिर्जा गालिब कक्ष में अपराह्न 02 बजे से नराकास दिल्ली उपक्रम के सदस्यों कार्यालयों के प्रतिभागियों के बीच हिंदी दोहा प्रतियोगिता पाठ का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों का नीपको की ओर से हार्दिक अभिनन्दन किया। उसके बाद श्री शान्तनु बेजबरूआ, वरि. प्रबंधक (मा.सं.) ने डॉ. पूरन चन्द्र टंडन, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय और श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), विद्युत मंत्रालय का गमछे से स्वागत किया।

प्रतियोगिता का शुभारंभ प्रदीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को एक दोहे का पाठ अर्थ सहित करना था, इसके लिए उन्हें 10 मिनट का समय दिया गया। इस प्रतियोगिता में 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के विजेताओं का निर्णय करने के लिए दिल्ली विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डॉ. पूरन चन्द्र महोदय, विद्युत मंत्रालय से श्री अमित प्रकाश, संयुक्त निदेशक(राजभाषा) महोदय एवं नीपको से सुश्री सुनीता रानी सिन्हा, सहायक हिंदी अधिकारी निर्णायक मंडल के सदस्य थे। इस अवसर पर नीपको की ओर से स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। अंत में श्री शांतनु बेजबरूआ, वरि. प्रबंधक (मा.सं.) ने सभी को धन्यवाद दिया।

लाभांश का भुगतान

नीपको ने वर्ष 2017-18 के लिए भारत सरकार को 47.00 करोड़ रुपये की अंतरिम लाभांश राशि का भुगतान किया। नीपको के सीएमडी ने लाभांश चेक माननीय विद्युत राज्य मंत्री (आईसी) को 23.10.2018 को नई दिल्ली में सचिव (विद्युत) और विद्युत मंत्रालय एवं नीपको के अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों की उपस्थिति में प्रदान किया। वर्ष **2017-18** के लिए कुल लाभांश भुगतान की राशि **88.00 करोड़ रुपये** है।

भारत के प्रधानमंत्री ने 09 फरवरी, 2019 को अरूणाचल प्रदेश में नीपको की 110 मेगावाट पारे जल-विद्युत परियोजना को राष्ट्र के नाम समर्पित किया

प्रमाण पत्र

श्री आर. के. सिंह, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा ने नीपको को 31 दिसंबर 2019 तक शत-प्रतिशत विद्युतीकरण का लक्ष्य प्राप्त करने पर प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया। इस पुरस्कार को श्री ए. जी. वेस्ट खारकोंगर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नीपको ने दिनांक 26 फरवरी, 2019 को गुरूग्राम, हरियाणा में आयोजित राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के ऊर्जा और नवीन व नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के सम्मेलन में प्राप्त किया।

निगम में आयोजित अन्य कार्यक्रमों की झलक

31 अक्टूबर, 2018 को राष्ट्रीय एकता दिवस (नेशनल यूनिटी डे) के रूप में 'स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती' के अवसर पर नीपको की विभिन्न परियोजनाओं/कार्यालयों/स्थानों पर कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण के पश्चात 'एकता के लिए दौड़' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पीएससीबी के तत्वावधान में 21 वॉ इंटर सीपीएसयू कैरम टूर्नामेंट, 2018 की मेजबानी नीपको द्वारा यू तिरत सिंग इंडोर स्टेडियम, शिलांग में दिनांक 04 से 08 दिसम्बर, 2018 तक किया गया।

कॉर्पोरेट कार्यालय, शिलांग में 12 दिसम्बर, 2018 को हेपेटाइटिस - बी पर जागरूकता सह टीकाकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जनवरी 2019 को वीकेवी, किमी में स्वामी विवेकानंद जयंती/राष्ट्रीय युवा दिवस धूमधाम से मनाया गया।

26 जनवरी, 2019 को नीपको की विभिन्न परियोजनाओं/कार्यालयों/स्थापनाओं में 70 वॉ गणतंत्र दिवस बड़े ही हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया।

नीपको स्थापना दिवस

नीपको ने अपने विभिन्न कार्यालयों/परियोजनाओं/स्थलों पर 02 अप्रैल, 2019 को अपना 44 वां स्थापना दिवस मनाया।

आतंकवाद विरोधी दिवस 2019

नीपको मुख्यालय सहित सभी अधीनस्थ कार्यालयों एवं संयंत्रों में आतंकवाद विरोधी दिवस 2019 मनाया गया। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य वैश्विक शांति और अहिंसा के संदेश को फैलाना और युवाओं को संप्रदाय-प्रथाओं का पालन करने और गुमराह होने से रोकना है।

आतंकवाद विरोधी दिवस उन हजारों सैनिकों के बलिदान का सम्मान करता है जिन्होंने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। यह उन लोगों को श्रद्धांजलि देने का दिन है, जिन्होंने आतंकवादी हमलों में अपनी जान गंवाई।

मुख्यालय, शिलांग

अगरतला गैस टरबाईन कंबाइंड साइकिल पावर प्लांट (अगरतला)

त्रिपुरा गैस आधारित विद्युत संयंत्र, (त्रिपुरा)

कामेंग जल विद्युत परियोजना, (अरूणाचल प्रदेश)

कोपिली जल विद्युत संयंत्र, उमरॉंगसो

रंगानदी जल विद्युत संयंत्र, अरूणाचल प्रदेश

तुईरियल जल विद्युत संयंत्र, मिजोरम

समन्वय कार्यालय, कोलकाता

दोयांग जल विद्युत संयंत्र, नागालैंड

5वॉं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

योग विज्ञान का उद्गम, धर्म या विश्वास पद्धति की उत्पत्ति से हजारों वर्ष पहले हुआ था। द्रष्टा और ऋषियों ने इस शक्तिशाली योगिक विज्ञान को एशिया, मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पहुंचाया। योग शरीर, मन, भावना और ऊर्जा के स्तर पर काम करता है जिससे कि शरीर प्रसन्नचित और उर्जावान बना रहता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए नीपको ने अपने सभी कार्यालयों में दिनांक 21जून, 2019 को 5वॉं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का अनुपालन किया।

कारपोरेट मुख्यालय, शिलांग

समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली

समन्वय कार्यालय, गुवाहाटी

दोयांग जल विद्युत संयंत्र, नागालैंड

असम गैस आधारित विद्युत संयंत्र, असम

कोपिली जल विद्युत संयंत्र, उमरांग्सों

त्रिपुरा गैस आधारित विद्युत संयंत्र, त्रिपुरा

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

नीपको मुख्यालय,शिलांग तथा सभी अधीनस्थ कार्यालयों एवं संयंत्रों में दिनांक 31 मई,2019 को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अनुपालन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तम्बाकू उत्पादों का स्वयं सेवन नहीं करने का शपथ दिलाया गया और अपने परिजनों तथा परिचितों को धूम्रपान एवं अन्य तम्बाकू उत्पादों का सेवन नहीं करने के लिए प्रेरित करने के लिए जागरूकता फैलाई गई। अपने कार्यालय परिसर को तम्बाकू मुक्त रखने की भी प्रेरणा दी गई।

नीपको मुख्यालय,शिलांग

एजीटीसीसीपीपी (अगरतला)

कोपिली जल विद्युत संयंत्र, उमरांग्सों

त्रिपुरा गैस आधारित विद्युत संयंत्र, त्रिपुरा

रंगानदी जल विद्युत संयंत्र, अरूणाचल प्रदेश

तुईरियल जल विद्युत संयंत्र, मिजोरम

समन्वय कार्यालय, कोलकाता

समन्वय कार्यालय, गुवाहाटी

पर्यावरण संरक्षण तथा धारणी विकास

प्राकृतिक संसाधनों के उत्कृष्ठ परिस्थितिकीय संतुलन को अगली पीढ़ी के लिए संरक्षित रखते हुए भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण तथा निरंतर विकास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के स्थानीय लोगों तथा उनके समक्ष उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों में बहुमुखी संबंध है। आम तौर पर ये लोग ईश्वर के द्वारा दी गई प्राकृतिक संसाधनों तथा विशेष रूप से वनों पर अपनी आजीविका तथा निवास के लिए आश्रित हैं। वनों तथा अन्य दूसरे प्राकृतिक संसाधनों का विनाश कर गैर योजनाबद्ध तरीके से विकास कार्य करना इनके अस्तित्व के लिए खतरा बन सकता है। इस अद्वितीय तथा अनमोल प्राकृतिक पर्यावरण एवं उत्कृष्ठ परिस्थितिकी संतुलन को बनाए रखने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के विशाल संसाधनों तथा विद्युत शक्यता का विकास योजनाबद्ध तथा निरंतर तरीके से करने पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। पर्यावरण तथा परिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभावों पर नीपको उचित ध्यान देता है तथा अपनी परियोजनाओं के क्रियान्वयन तथा संचालन व रखरखाव के दौरान पर्यावरण तथा परिस्थितिकी पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव को न्यूनतम करने के लिए पर्याप्त उपाय करता है।

पर्यावरण तथा परिस्थितिकी सुरक्षा से संबंधित नियमों को कार्यान्वित करने तथा उससे बंधे रहने पर सर्वोच्च ध्यान देता है।

एवेन्यू प्लांटेशन

संयंत्र संसाधन केंद्र

नर्सरी

संयंत्र संसाधन केंद्र

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक केंद्रीय क्षेत्र का सार्वजनिक उद्यम होने के नाते एमओई एण्ड एफ, भारत सरकार के सभी नीतियों तथा दिशानिर्देशों का नीपको सख्ती से पालन करता है, जिससे कि पूर्वोत्तर की विशेष पर्यावरणीय परिस्थिति पर विशेष ध्यान रखते हुए विद्युत परियोजनाओं से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की पहचान कर उसे कम किया जा सके। निरंतर विकास के अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रत्येक परियोजना का पर्यावरण प्रभाव अध्ययन (ईआईए) किया गया। इसकी रिपोर्ट पर ध्यान दिया गया तथा पर्यावरण व वन मंत्रालय (एमओई एण्ड एफ), भारत सरकार से परियोजना के लिए प्राप्त की जाने वाली पर्यावरण स्वीकृति के लिए पर्यावरण प्रभाव अध्ययन व पर्यावरण प्रबंधन योजना रिपोर्टों का उचित रूप में उल्लेख किया जाता है।

प्रभाव का अध्ययन :

- भूमि पर्यावरण पर प्रभाव
- जल संसाधनों तथा जल गुणवत्ता पर प्रभाव
- पर्याप्त परिस्थितिकी, क्षेत्रीय वनस्पति और प्राणी समूह पर प्रभाव
- ध्वनि पर्यावरण पर प्रभाव
- वायु प्रदूषण
- सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण पर प्रभाव
- पानी से संबंधित बीमारियों के बढ़ते मामलों पर
- जलाशय प्रेशर सिस्मीसिटी (आरआईएस)

पर्यावरण प्रबंधन योजना :

- निर्माण क्षेत्र का भू-निर्माण तथा विकास करना
- प्रतिपूरक वनरोपण
- वनरोपण
- खदान तथा गंदगी निपटान साइट की उपयुक्तता
- ग्रीनबेल्ट विकास
- अरद्न रोधक/भूमि संरक्षण उपाय
- ट्रिटमेंट योजना अधिग्रहण क्षेत्र (सीएटी)
- जल गुणवत्ता को बनाए रखना
- सेडीमेंट लोड तथा प्रभाव का मॉनीटरिंग
- जैव-विविधता संरक्षण योजना
- जीविका हेतु नदी मत्स्य पालन
- वनस्पति उद्यान की स्थापना
- शिकार विरोधी उपाय
- ध्वनि कम करने के उपाय
- वायू प्रदूषण नियंत्रण
- सार्वजनिक स्वास्थ्य उपचार प्रणाली
- झूम कृषि पद्धति पर नियंत्रण के उपाय
- सार्वजनिक उपयोग जैसे स्कूल, डाकघर, बैंक, समुदाय गृह, बाजार, प्रार्थनागृह, कब्रगाह आदि का निर्माण करना
- पुरातात्तिवक महत्व के स्थान का संरक्षण
- पुनर्वास तथा पुन:स्थापन के उपाय
- डेम ब्रेक अध्ययन तथा आपदा प्रबंधन योजना
- पर्यावरण सुरक्षा उपायों को लागू करने हेतु जिला प्रशासन से विचार-विमर्श
- राज्य सरकार के प्राधिकारियों, जिला प्राधिकारियों, एनजीओ, पर्यावरणविद ग्रुपों, स्थानीय समुदाय, ग्राम समिति, लोक प्रतिनिधि, जनता के मुखिया, विशिष्ट व्यक्तियों आदि को लेकर आम सभा करना।

पर्यावरण प्रबंधन योजनाएं (ईएमपी) बना ली गई हैं तथा परियोजनाओं के निर्माण एवं इसके संचालन चरण के दौरान पर्यावरण पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव को कम या समाप्त करने के लिए कार्यान्वित किया गया है।

नीपको ने अपने यहॉं पर्यावरण संबंधी सभी मामलों से निपटने के लिए अपने कारपोरेट कार्यालय में एक पर्यावरण व आरआर प्रकोष्ठ की स्थापना की है।

विद्युत मंत्रालय के तहत नीपको प्रथम सीपीएसयू है जिसे पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली (ईएमएस) के लिए आईएसओ 14001-1996 स्वीकृत किया गया। कंपनी पर्यावरण प्रभाव आकलन की तैयारी और समग्रता में पर्यावरण प्रबंधन योजना के गठन के लिए पर्यावरण के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त प्रमुख सलाहकारों (एमओईएफ व सीसी, भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) को शामिल करता है।

संग्रहित

राष्ट्र के निर्माण में पूर्वोत्तर के भाषाओं की भूमिका

अरूण कु. प्रधान
उप-प्रबंधक(हिंदी)

भारत विविधताओं वाले राष्ट्र के साथ-साथ एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है और राष्ट्र एक कल्पित समुदाय है। जो कि पुरानी परिभाषाओं पर पूर्ण रूप से खरा नहीं उतरता है। अलगाववाद की स्थिति न उत्पन्न हो इसके लिए उत्तर-आधुनिकता ने बहुलतावाद को स्पेस दिया। इसको अंजाम देने के लिए भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में प्रारंभिक दौर से ही भाषाओं को प्रमुख आधार बनाया गया है, स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर रियासतों के एकीकरण तक की प्रक्रिया में भाषाओं की भूमिका प्रमुख थी। जबकि तत्कालीन परिस्थितियों एवं नीतियों में भाषा की केंद्रीयता को समझने के लिए ब्रिटिश कंपनी की नीतियों एवं निर्णयों को समझना आवश्यक होगा। ब्रिटिश संसद में मैकाले द्वारा पढ़ी गई रिपोर्ट जो तत्कालीन भारत को व्याख्यायित करती है, या विलियम फोर्ट कालेज की स्थापना एवं संचालन आदि अनेक ऐसे कार्यक्रम थे, जो भारत के एक राष्ट्र के रूप में अस्तित्व ग्रहण करने के पक्ष एवं विपक्ष दोनों में निहित होकर भाषा की प्रमुखता को स्वीकार करते थे। इसके साथ ही साथ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी प्रशासन के सामने भी भाषाएँ अपनी अलग-अलग भूमिकाओं में उपस्थित थी।

भाषा एवं राष्ट्र का अंतरंग संबंध रहा है और इसको किसी भी स्थिति में नकारा या नजर-अंदाज नहीं किया जा सकता है। उन्नीसवीं सदी में सामूहिक राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण में भाषा की प्रभावी भूमिका रही है। एक समय ऐसा भी था, जब राष्ट्रीय इकाई को सामान्यत: भाषा के दृष्टिकोण से देखा गया और कुछ संदर्भों में यह प्रवृत्ति बीसवीं सदी में भी यथावत् है।

भाषा एवं राष्ट्र का संबंध हमेशा से कौतूहल भरा रहा है। राष्ट्रवाद को परिभाषित करने के लिए राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का अवलोकन किया जाना चाहिए, जिसमें दृढ़-संकल्प का होना महत्वपूर्ण होता है और इसमें अधिकांश भूमिका भाषा की होती है। व्यापक राष्ट्रवाद के निर्माण में सिर्फ भाषा ही कोई निर्णायक संरचक नहीं हो सकती। यदि ऐसा है तो एक राष्ट्र की वैधानिक सीमा के अंदर हजारों संप्रभु राष्ट्र होते। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है, लेकिन यह एक मात्र कारक नहीं हो सकती। राष्ट्रवाद की अमूर्त संकल्पना, जब भौतिक रूप से किसी राष्ट्र के निर्माण के लिए कार्य करती है, तो उसमें अनेक कारक सक्रिय रहते हैं। हांस कोहन कहते हैं कि, "राष्ट्रीयताएँ तब अस्तित्व में आती हैं, जब समाज का एक समूह कुछ निश्चित उद्देश्यों को लेकर एकत्रित होता है। समान्यत: राष्ट्रीयता अनेक एकीकृत तत्वों को लेकर आगे बढ़ती है, इनमें कुछ ही तत्व सभी लोगों के पास होता है, जिनमें से समान वंश-परंपरा, भाषा, क्षेत्र, राजनीति और धर्म की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, अर्थात् राष्ट्र निर्माण के लिए इनमें से कोई भी अनिवार्य नहीं है।" पाकिस्तान, इज़राइल,, आयरलैंड, श्रीलंका, पोलैंड, बर्मा, और ग्रीस जैसे देशों का राष्ट्रवाद धर्म आधारित है न कि भाषा आधारित। यह भी महत्वपूर्ण है कि अफ्रीकी देशों की राष्ट्रीयता भाषा से परे निजी अस्मिताओं के आधार पर तैयार होती है।

जबकि भारत की बात की जाये तो यह सर्वज्ञात है कि, भारत एक बहुभाषी देश है। जिसमें भारतीय राष्ट्र के निर्माण में कहीं न कहीं अकारण ही भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। भले ही वे भाषाएँ भारत के किसी भी क्षेत्र की क्यों न हों। इनके तहत हम भारतीय भाषाओं पर विचार करें तो जिसके अंतर्गत हम देखते हैं कि, 1961 की जनगणना के अनुसार यहाँ पाँच भाषा-परिवार जैसे- भारोपीय, द्रविड़, एस्ट्रो-एशियाई, तिब्बत-बर्मी एवं सेमिटो-हेमिटिक के अंतर्गत 122 भाषाएँ एवं 1652 मातृभाषाएँ हैं। आज संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ- हिंदी, बंगाली, मराठी, उर्दू, गुजरती, उड़िया, पंजाबी, असमी, मैथिली, कश्मीरी, नेपाली, सिंधी, कोंकणी, डोगरी, संस्कृत, तमिल, तेलगु, कन्नड, मलयालम, मणिपुरी, संथाली, एवं बोडो है। देश में 87 भाषाएँ मुद्रण एवं प्रसार-माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है, 71 भाषाओं में आकाशवाणी का प्रसारण होता है, 15 से अधिक भाषाएँ राजभाषा के रूप में कार्यरत है। 47 भाषाएँ विद्यालयों के शिक्षण के माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती हैं। यहाँ तक भारत की मुद्रा द्विभाषिक है और 15 भाषाओं द्वारा इसका मुद्रा-मान संप्रेषित कराया जाता है। देश में 87 भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं।

भारतीय बहुभाषिकता अपने आप में ही एक जटिल एवं महत्वपूर्ण संदर्भ है, जिसमें भिन्न भाषा-परिवारों, संस्कृतियों, क्षेत्रीय अस्मिताओं एवं अपने लोकतांत्रिक स्वरूप में देश का भूगोल समांतर रूप से अनेक आयामों के साथ उपस्थित होता है। इस पूरे भू-भाग को जोड़ने का काम हिंदी ने किया है, इसलिए हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में अपने मानक एवं अमानक रूपों को भी समेटे हुए प्रस्तुत होती है। अगर हिंदी के उपयोगिता को देखा जाए तो मानक भाषा हिंदी से अधिक संपर्क भाषा हिंदी की उपयोगिता है। अगर भाषाओं की स्थिति को देखा जाए तो 114 भाषाएँ जनगणना में पंजीकृत हैं, (97 प्रतिशत भाषी: 2003 तक) उनमें से 22 भाषाएँ संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज है। इन सबमें 14 भाषाएँ कम से कम किसी एक राज्य में राजभाषा है, और 2001 तक इन भाषाओं के 957 मिलियन भाषी है। और 8 भाषाएँ राजभाषाई परिदृश्य के बाहर हैं, और 2001 तक इनमें 33 मिलियन भाषी है। जबकि 92 अन्य भाषाओं में (3 प्रतिशत भाषी: 2003 तक)। इनमें से कुछ भाषाएँ जिला या स्थानीय स्तर पर सह-राजभाषा में कार्यरत है। इन भाषाओं में 2001 तक 24 मिलियन भाषियों की स्थिति दर्ज हैं। इन 114 भाषाओं में से 88 भाषाएँ जनजातीय हैं, जिनके भाषी 31 मिलियन हैं, जिनमें से संथाली और बोडो संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज हैं।

उपरोक्त भाषिक स्थितियों और आंकड़ों को देखते हुए यह समझा जा सकता है कि भारत के राष्ट्र के निर्माण में समस्त भाषाओं के साथ-साथ पूर्वोत्तर के भाषाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान है। पूर्वोत्तर की भाषाएँ आज भाषिक सफलता की नई कहानी कह रही हैं। सघन बहुभाषिकता सृजनात्मक होती है एवं इसमें सबके पास भाषिक स्वतंत्रता होती है। जिसमें भारत इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिसका पूर्वोत्तर क्षेत्र भारतीय तिब्बत-बर्मी भाषाई क्षेत्र भी महत्वपूर्ण अंग है। अपनी बहुभाषिकता को पूर्वोत्तर भारत विनम्र दायित्वबोध के साथ निर्वहन करता है। पूर्वोत्तर के क्षेत्र में समस्त भारतीय भाषाई प्रकृति की छवि यहाँ स्पष्टत: दिखाई देती है। पूर्वोत्तर के भाषाई क्षेत्र की पहचान भारतीय भाषाई यथार्थ से इतर नहीं है बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। सम्पूर्ण भाषाई क्षेत्र में हिंदी एक वैकल्पिक सामान्य भाषा के रूप में उभरी है। यहाँ अँग्रेजी भाषा का विशेष महत्त्व है। क्योंकि औपचारिक संदर्भों में अँग्रेजी भारतीय आवश्यकता बन चुकी है। अंतर-सामुदायिक स्तर पर हिंदी संप्रेषण की महत्वपूर्ण कड़ी है। और देश केई अन्य क्षेत्रों की तरह स्थानीय मातृभाषा, अँग्रेजी और हिंदी को संपूर्ण पूर्वोत्तर भारतीय क्षेत्र में समुचित स्थान मिला है।

संदर्भ सूची :

1. सिंह, शैलेन्द्र कुमार और त्रिपाठी, अरिमर्दन कुमार (2015) भाषा-परिस्थितिकी:भारतीय एवं वैश्विक

   परिप्रेक्ष्य: टूडे और टूमारो प्रिंटर और पब्लिशर्स, नई-दिल्ली।

2. देवी, सरजूबाला, उत्तर-पूर्व भारत में बहुभाषिकता, भाषा-शिक्षा एवं बहुभाषिक शिक्षा प्रक्रिया:

   गवेषणा (जुलाई-दिसंबर)2009, पृ.सं.112-125 आगरा: केंद्रीय हिंदी संस्थान।

3. त्रिपाठी, अरिमर्दन कुमार (2014) भाषा के समकालीन संदर्भ: साहित्य संगम, इलाहाबाद।

मैं जीवन हूँ

लालछंदमा चांगसान
सहायक-।
कारपोरेट कार्यालय, शिलांग

मैं जीवन हूँ,
मुझमें यादें हैं और बिखरे सपने भी,
मैं वो सांस हूँ, जिसने मुझे जिया है ।
मैं जीवन हूँ,
मैं उम्मीद हूँ, एक आस हूँ,
उन जीवित सपनो के लिए
मैं लोगों के कण-कण में बसता हूँ,
शान-शान में बट्टा हूँ ।
मैं जीवन हूँ,
मुझे जो जाना उसने समझा,
मुझे जो समझा उसने जिया,
मुझे जो ढूंढा उसने पाया, मुझे जो छोड़ा उसने खोया ।
मैं जीवन हूँ,
इस चक्रव्यूह में, हर रोज, हर पल, हर लम्हा,
कुछ बनते बिखरते दौर में,
मैं फिर उम्मीद बन जाता हूँ
मैं जीवन हूँ ।

विभिन्न जनजातियों का एक प्रदेश: अरूणाचल प्रदेश

लाम ड्रोमा
कनि.संपर्क सहायक
कारपोरेट कार्यालय, शिलांग

'भारत की शान एकता, भारत की पहचान विविधता में एकता' यह स्लोगन बिल्कुल सटीक बैठता है अरूणाचल प्रदेश पर। अरूणाचल प्रदेश भारत के उत्तर पूर्व में स्थित एक पर्वतीय प्रदेश है। यह प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त एक जनजातीय प्रदेश है, जिसमें एक नहीं, दो नहीं, चार या पाँच भी नहीं, बल्कि बीस (20) से भी ज्यादा प्रमुख जनजातियाँ और 85 अन्य जनजातियाँ रहती हैं। भारत में सूर्य की पहली किरण इस, प्रदेश पर पड़ती है, इसलिए इसे उगते हुए सूर्य की भूमि कहा जाता है। यह 83,743 वर्ग कि.मी. के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इसके पश्चिम में भूटान और तिब्बत, उत्तर में चीन, पूर्व में म्यांमार तथ दक्षिण में असम स्थित हैं। पहले यह 'उत्तर-पूर्व सीमांत एजेंसी' अर्थात् 'नेफा' के नाम से जाना जाता था। 21 जनवरी, 1972 को इसे केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया। इसके बाद 20 फरवरी, 1987 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा मिला। प्रदेश की लगभग 60 प्रतिशत भूमि घने जंगलों से ढकी हुई है। दुर्गम पर्वतों, गहरी घाटियों और नदियों के कारण यह प्रदेश पूर्वोत्तर क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण देश में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

हाल ही में (2018) में अरूणाचल देश के तीन (3) नए जिलें बने, जिनके नाम कुछ इस प्रकार है'- पक्के केसंग (Pakke Kesang) लेपा राडा (Lape - Rada), शि- योमी (Shi-Yomi) इस प्रकार अब अरूणाचल प्रदेश में कुल जिलों की संख्या पच्चीस (25) हो गयी है। अधिकांश जिलों के नाम प्रदश की नदियों पर रखे गए है। प्रदेश में बहने वाली प्रमुख नदियाँ है। कामेंग, सुबनसिरी, सियांग, दिबांग, लोहित, तिरप, दाफा, कमला, दिकरांग इत्यादि। इन जिलों न्यीशी तागिन, आदि मोम्पा, खाक्ती, शेरदुकेपन, आका, मीजी, गालों, अपातानी, मिशमी, बुगुन इत्यादि विभिन्न जनजातियाँ रहती हैं। इनमें से सबसे ज्यादा आबादी न्यीशी जनजाति के लगभग एक से डेढ़ लाख है और सबसे कम आबादी बुगुन जिससे (खोवा) भी बोला जाता है, लगभाग दस (10) हजार है। विभिन्न जनजातियों की अपनी-अपनी बोलियाँ, भाषा-भाषाएँ वेश-भूषा, पर्व-त्योहार, परम्परागत मान्यताएँ तथा सामाजिक रीति-रिवाज है। इतने विभिन्नताओं के बावजूद भी यह अपने-आप को एक ही नाम से पहचाना जाना पसंद करते हैं और वह है अरूणाचलीं।

अरूणाचली की जनजातियों का बहुत बड़ा वर्ग 'आबो तानी' अथवा पिता तानी को अपना पूर्वज मानता है। 'आबो तानी' पूज्य मिथक पुरूष हैं, ऐसी मान्यता है कि तानी अलौकिक शक्तियों से युक्त महापराक्रमी पुरूष थे। मिन्मलिखित जनजातियाँ स्वयं को आबो तानी की संतान मानती हैं:- आदि न्यीशी, आपातानी, हिल मीरीद्व तागिन और सुलुंग। 'दोन्यी पोलो' अर्थात सूर्य - चंद्रमा में इन जनजातियों की प्रबल आस्था है। इनकी मौखिक परंपरा में दोन्यी पोलों के संबंध में अनेक आख्याम उपलब्ध है। इनका विश्वास है कि दोन्यी - पोलों हमारी सभी गतिविधियों पर नजर रखता है, वह हमारे सभी अच्छे -बुरे कामों का निरीक्षण करता रहता है और तदनुसार हमें सुख-दुख देता है।

अरूणाचली जनजातियों का एक बड़ा वर्ग बौद्ध धर्म में आस्था रखता है। अरूणाचल प्रदेश की मोम्पा जनजाति सबसे अधिक जनसंख्यावाली बौद्ध जनजाति है। जहाँ महायान और हीनयान दोनों शाखाओं के मतावलंबी लोग निवास करते हैं। अरूणाचल की निम्नलिखित जनजातियाँ बौद्ध धर्म में विश्वास करती हैं-

मोंपा, खाम्ती, खंबा, मेंबा, सिंगफों और शेरदुक्येन, इनमें से मोंपा, खेरदुक्पेन और मेंबा जनजातियाँ बौद्ध धर्म की महायान शाखा में विश्वास करती हैं जबकि खाम्ती और सिंहफों हीनयान शाखा में आस्था रखती है। मिरि और नोक्ते जनजातियों पर असम के बैष्णव आंदोलन के समय इन लोगों पर हिन्दू धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा। अत: ये लोग हिंदू धर्म को मानते हैं। यह ही नहीं, अब अरूणाचल में ईसाई धर्म को मानने वालों की आबादी भी बढ़ती जा रही है। अब तक लगभग 19% आबादी ईसाई धर्म की अनुयायी है।

इन सभी जनजातियों की अपनी-अपनी भाषाएँ तथा उपभाषाएँ हैं। भाषिक भिन्नता के बावजूद यह सभी जनजाति एक दूसरे से सम्पर्क बनाए रखें हुए हैं और उसका काम 'हिंदी' ने किया। अरूणाचल में हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में ग्रहण कर लिया गया है। आज इस प्रदेश की पढ़ी-लिखी पीढ़ी के साथ-साथ पुराने अनपढ़ लोग भी हिंदी बोलते -समझते हैं। और यहाँ की हिंदी का रूप अरूणाचली हिंदी है।

इस प्रदेश में भारत के हर एक कोने के लोग भी देखने को मिलेंगे जैसे- माड़वाड़ी, राजस्थानी, बिहारी, बंगाली, नेपाली, तमिल इत्यादि। देखा जाए तो अरूणाचल भारत का मिनिएचर (Miniature) अर्थात लघु चित्र है, जहाँ विभिन्न जन-जाति एक साथ इतने प्यार से रहते हैं और यह संदेश देते है कि एकता में बल है। अत: इस लेख को हम यह कहकर समाप्त करते हैं- ''अनेकता में एकता यही अरूणाचल की विशेषता'' ।

संसार में ऐसे लोग थोड़े ही होते हैं, जो कठोर किंतु हित की बात कहने वाले होते हैं। - महर्षि वाल्मीकि

पूर्वोत्तर भारतः साहित्य और संस्कृति

आलोक सिंह
सीनियर रिसर्च फेलो,
नेहू, शिलांग

भारत के संदर्भ में जब कभी हम भाषाई और सांस्कृतिक बहुलता की बात करते हैं तो अनायास ही इस देश के उत्तरी पूर्वी राज्यों की इकट्ठी पहचान का स्मरण हो आता है। आकार और आबादी में छोटे-छोटे ये राज्य में आठ ही हैं लेकिन ये एकसाथ मिलकर विशाल भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर की सुंदर नजीर पेश करते है। ये राज्य सामुहिक रूप से भारत के बहुवचनात्मक वैविध्य की अनेकानेक अर्थ-छवियों से संपन्न उसका बहुरंगी झिलमिल संसार प्रस्तुत करते हैं। सही मायने में इसी से भारत की अतुल्यता की धारणा पुष्टी होती है। हालांकि सांस्कृतिक बहुवचनीयता अखिल भारत के स्वभाव में या कहें उसके जैविक गुणसूत्र में विद्यामान है। अत: सदियों से इस देश के जन का समूचा जीवन-व्यापार ही इस विस्मयकारी बहुवचनीयता से निर्धारित और संचालित होता रहा है।

सौभाग्य से भारत का उत्तर-पूर्व क्षेत्र आधुनिक-ज्ञान-विज्ञान के आलोक में अपनी जनपदीय भाषाओं और संस्कृतियों के वैविध्य में समृद्ध, विकासमान भारत का नया गौरवशाली चेहरा है। वह एक साथ प्रकृत और आधुनिक है। एक साथ स्मृतिजीवी और रूढ़ परंपराभंजक। वह एक ओर लोक-जीवन में परिव्याप्त मिथकीय कल्पनाओं से जीवन-रस खींचने वाला और बेहतर भविष्य के लिए स्वप्नदर्शी है, तो वहीं दूसरी ओर आधुनिक तर्क-बुद्धि और विवेक के आलोक में अपने समय, समाज और देश-दुनिया के यथार्थ को विवेचित- विश्लेषित कर सकने की सामर्थ्य रखने वाला नवजागरित मनुष्य है। सुदूर उत्तर-पूर्व के छोटे-छोटे जन-जातीय समुदायों और देश के अन्य दुर्गम इलाकों में बसने वाले जन-जातीय समुदायों के बीच 'चेतना में यह मौलिक फर्क है। इस कारण प्रकृति के अत्यंत निकट संपर्क में स्वाभाविक जीवन-यापन करता हुआ भी उत्तर-पूर्व का मानव-समुदाय लंबे समय से आधुनिक और वैज्ञानिक अभिवृत्ति से संपन्न भारत का अपूर्व मानव-समुदाय बना रहा है। अनायास ही डॉ. भूपेन हजारिका की पंक्तियाँ मानस पटल पर उपस्थित हो जाती है।

''आकाशी गंगा बिछरा नाई-नाई बिछरा स्वर्ण अलंकार।
निष्ठुर जीवन संग्रामत बिछारे मरमर मात एखार।।

भावार्थ:- आकाश की गंगा मैं नहीं चाहता। न ही मुझे स्वर्ण अलंकार की चाहत है। निष्ठुर जीवन संग्राम में बस मुझे प्यार के दो शब्द चाहिए।''

पूर्वोत्तर भारत में छोटी-छोटी आंचलिक बोलियों और भाषाओं की अपूर्व सधनता है। इस दृष्टि से यह देश के समृद्धतम भाषाई क्षेत्रों में परिगणित है। इसमें अनेक ऐसी भाषाएँ हैं जिनको बोलने वालों की संख्या बेहद कम है। ऐसी भाषाएँ खतरे की जद में आती है। किसी भाषा के साथ उस भाषाई समुदाय की देश-कालातीत विरासत विन्यस्त होती है। भाषा मनुष्य की चेतना के संसार का अनिवार्य हिस्सा है उसकी स्मृति का अभिन्न हिस्सा। भाषा मनुष्य के मात्र ऐतिहासिक दाय मात्र का वहन नहीं करती, वह इतिहास और समय की जद को अतिक्रमित कर इतिहासेतर समायातीत में प्रवेश करती है और वहीं से वह मनुष्य की जीवनेषणा, जीवनानुराग और जीवन-रस खींच लाती है।

भाषा एकमात्र आश्रय है जहाँ मनुष्य का समग्र कालबोध, अस्तित्व-चेतना और स्मृति का संसार विश्राम पाता है। पूर्वोत्तर भारत का मनुष्य इस अर्थ में सौभाग्यशाली है। वह अनेक छोटी-छोटी बोलियों-भाषाओं के गर्भ में अपनी विशिष्ट पहचान समोए हुए है। इस पहचान में भाषा के समस्त गुण-धर्म शामिल हैं, जिनमें ऊपर कतिपय गुण-धर्म प्रमुख है। अलग-अलग अस्मितओं से संपन्न भाषाई समुदाय दूसरे भाषाई समुदायों से बिल्कुल अलग-थलग नहीं है। कोई एक दूसरे से इतनी ही अलग है जितने से एक को दूसरे की पहचान को अतिक्रमित कर सकने की सहूलियत न मिल जाए। बल्कि प्रत्येक भाषा-बोली की ऐसी स्वायतता सुलभ हो सके कि वे एक-दूसरे के परिसर में आबाध आवाजाही भी कर सकें और स्वंय प्रतिष्ठ भी हों। मिलान कुंदेरा के शब्दों में यह 'रेडिकल स्वायतता' है।

भाषाएँ शब्दों और वर्णों का निरा संयोजन मात्र नहीं हैं। वे मनुष्य के सामूहिक जीवन के रेशों-धागों से महीन बुनावट में निर्मित होती है। हर भाषा की बुनावट के रेशों-धागों में उसका अपना लोक भी विन्यस्त होता है, जो उस भाषाई समुदाय की संस्कृति को वहन करता है। पूर्वोत्तर भारत में तमाम बोलियों-भाषाओं का जो व्यापक संजाल है, जो उस क्षेत्र की सामाजिक संरचना की निर्दिष्ट करता है। यह लोकाधारित बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक सामाजिक संरचना पूर्वोत्तर भारत को शेष भारत से अलग एक विशिष्ट पहचान सुलभ कराती है। इस संदर्भ में पूर्वोत्तर भारत को देखना, पढ़ना, समझना बेहद दिलचस्प अनुभव है।

वही साहित्य भाषा और संस्कृति का प्रमुख घटक है और उत्पाद भी साहित्य है। यह मौखिक भी और लिखित भी। मौखिक साहित्य का स्वरूप लौकिक है - लोक से नि:सृत और उसी से विन्यस्त। जिन भाषाओं और बोलियों का लोक से सीधा नाता है, वे अपना साहित्यिक जीवन लोक से उद्धृत काव्य-कथा और कला-रूपों से ग्रहण करती हैं। इन रूपों का प्रमुख उद्गम-स्थल लोक में पुराकाल से प्रचलित मिथ और मिथकीय आख्यान हैं। मिथकीय आख्यान नाना-रूपतामक होते हैं जैसे-दंत-कथा, परी-कथा, पशु-कथा, लोक-नाटिकाएँ, लोक-कथा, लोकगीत, सृष्टि-कथा, छंदबद्ध मुहावरे, कहावतें इत्यादि। ये उपादान जब लोक के जरिए लोक के मौखिक साहित्य का अंग बनते हैं, तो संबद्ध भाषाई और सांस्कृतिक समुदाय की जीवन-शैली को आमूल-चूल प्रभावित करते हुए उसे परिवर्तित भी करते हैं। साहित्य के ये मौखिक रूप पूर्वोत्तर भारत के लोक जीवन का अभिन्न अंग है। लौकिक साहित्य पूर्वोत्तर के भारतीय मनुष्य का सनातन प्रकृति के साथ पवित्र रिश्ते का आख्यान है। यह मनुष्य सदियों से इस पवित्र रिश्ते को जीता और उससे प्रतिकृत होता आया है ---

''ओ, जब से पृथ्वी, जल और चट्टानों का है अस्तित्व
हम हैं यौंग वेम-ओउ-निउ के पुत्र
ओ, लड़के हों स्वस्थ तथा बलशाली

रहें वे एकता के सूत्र में बँधे।''

पूर्वोत्तर भारत का साहित्य सर्वाधिक उन्नत रूप में देखने को मिलता है। ''21 वीं सदी को पूर्वोत्तर भारत के साहित्य का नवजागरण काल कहा जा सकता है। असमिया साहित्य में शंकरदेव, माधवदेव, इंद्रिरा गोस्वामी और लक्ष्मीनाथ बेजवरूआ के कारण संपूर्ण भारत में प्रतिष्ठित तो है ही, खासी, गारो, मणिपुरी भाषाओं का भी साहित्य अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाने के लिए कशमशा रहे है। असम प्रांत में बोड़ो, कार्बी, डिमाषा, राभा, मिरि, तिबा, मिसिड. और ग्वालपड़िया बोलियाँ प्रचलित हैं, किंतु इनमें साहित्य की समृद्ध परंपरा केवल बोड़ो और कार्बी में ही मिलती है।'' ....बोड़ो साहित्य के प्रारंभिक कवियों की कविताओं का संकलन रूपनाथ ब्रम्हा और मादाराम ब्रह्माने 1923 ई. में प्रकाशित किया। इस काल के यशस्वी साहित्यकारों में प्रसन्न कुमार खाख्लारी, आनंद ब्रह्म, सतीशचंद्र बसुमतारी, काली कुमार लाहरी, प्रमोदचंद्र ब्रह्म माने जाते हैं।''

'' वही 20 वीं शताब्दी का प्रारंभिक काल खासी साहित्य का नवजागरण-युग कहा गया। यह खासी समाज के सांस्कृतिक जागरण का भी समय है। इस समय के अनेक कवि आज भी खासी साहित्य का गौरव माने जाते हैं, जैसे-राबोन सिंग, जीबन राय, राघोन सिंग बेरी, हीमोवेल लिड.छो सोसोथाम खासी साहित्य के सर्वोच्च शिखर हैं ये मूलत: प्रकृति और करुणा के सिद्ध कवि थे। इनकी तुलना छायावाद के स्तंभ सुमित्रानंदन पंतजी से की जाती है। सोसोथाम और पंतजी का समय लगभग एक है। सोसोथाम को खासी साहित्य में आधुनिक काव्य शैली का जन्म दाता भी कहा जाता है। सोसोथाम ने अपनी एकलौती पुत्री की अकाल मृत्यु की स्मृति में आज़ाद पंक्षी' नामक कविता लिखी जिसकी तुलना महाप्राण निराला की कविता 'सरोज-स्मृति' से की जाती है।

सोसाथाम के समकालीन अन्य कवि जैसे-वाहलांग, ब्रोनाथैंक्यू, लेविस ने भी आधुनिक खासी कविता को नया आयाम दिया। सोसाथाम की तरह वाहलांग भी मूलत: प्रकृति के मर्मज्ञ कवि माने गए है।''4

खासी साहित्य के अतिरिक्त गारो साहित्य का भी सर्वाधिक उन्नत देखने को मिलता है आज भी गारो जनजाती के लोग काव्य को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने की इच्छा रखते हैं। गारो भाषा के काव्य के आरंभिक कवियों में एम. के. डब्ल्यू. मोमिन का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इस काल के अन्य कवियों में मोधू नाथ मोमिन, तूनीराम माराक, कोसन जी, मोमिन तथा फी.बी. मोमिन इत्यादि प्रमुख हैं। इस काल का गारो काव्य नीति प्रधान और उपदेश परक हैं तथा गारो भाषा के इस काव्य में 'जनशिक्षा' का स्वर मुखर है।

''सन् 1940 ई. के आस-पास गारो भाषा के साहित्य के परिदृश्य पर उभरे कवियों में हावई डी. मोमिन, इवलिन आर. माराक तथा जॉन मोनी डी. शीरा इत्यादि प्रमुख है। इन कवियों के काव्य ने गारो भाषा के काव्य के विषय क्षेत्र का विस्तार तो किया ही, साथ ही कलात्मक उत्कृष्टता की ऊँचाइयों का भी स्पर्श किया। गारो भाषा के ये युवा कवि अपनी सांस्कृतिक विरासत से भी परिचित थे और अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति अपने दायित्वों का ज्ञान भी उन्हें था। इसलिए इन कवियों ने अपने रचनाओं को सामाजिक जागरण का माध्यम बनाया। अपनी मातृभूमि के प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति भी इन सभी कवियों ने की है।''

भाषिक विविधता की तरह अरूणाचल प्रदेश का साहित्यिक परिदृश्य भी वैविध्यपूर्ण है। अजादी के पहले तो यहाँ पर किसी भी प्रकार की साहित्यिक हलचल नहीं थी, तब यहाँ जो कुछ भी साहित्य था वह लोकभाषाओं में विद्यमान लोक साहित्य ही था। अरूणाचल की सभी जनजातियों के पास लोककथाओं लोकगीतों, लोकगाथाओं की एक समृद्ध परंपरा है। आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ आजादी के बाद अरूणाचली युवाओं का एक वर्ग साहित्य लेखन की ओर उन्मुख हुआ और इसके लिये उन्होंने जिस भाषा का चयन किया वह थी असमिया। अरूणाचल के पहले रचनाकार लुम्मेर दायी असमिया भाषा में ही साहित्य लेखन करते थे। अरूणाचल प्रदेष के पहले एकमात्र साहित्य आकादमी विजेता श्री वाई. डी. थोंगची जी को उनकी असमिया कृति 'मौन उट मुखर ह्रदय' पर ही साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि अरूणाचल की पहली पीढ़ी ने असमिया माध्यम से ही शिक्षा की थी। उनकी साहित्यिक समझ एवं संवेदना असमिया रचनओं से ही विकसित हुई थी।

इनके अतिरिक्त तागाड. ताकी, सामुरू लुढत्रचाड., रिंचीन नोर्बू मासोबी जैसे कुछ और रचनाकार हैं जिन्होंने असमिया में अपनी लेखनी चलायी है। श्री तागाड. ताकी ने चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर 'बार्डर इमि' (सीमा अग्नि) नामक एक नाटक लिखा है, जो इस मामले में एक दुलर्भ पुस्तक है कि यह किसी भुक्तभोगी की लेखनी से निकली है।

असमिया के साथ-साथ अरूणाचल की स्थानीय भाषाओं में भी कहानी और कविताएं लिखी गयी हैं। अरूणाचल अन्य भाषा में आदि भाषा साहित्यिक रूप में समृद्ध नहीं हैं लेकिन उनमें वैचारिक अकुलाहटें शुरू हो गई और देर सवेर उनमें भी आधुनिक साहित्य लिखा जाएगा। गालों समाज के चर्चित रचनाकार जुमसि सीराम ने अपनी भाषा में तीगीं आलुक नामक लघु उपन्यास लिखा है।

इसके अतिरिक्त मिजो, मणिपुरी, नागा, साहित्यकारों ने भी अपने साहित्य में पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न प्रांतों भाषाओं, बोलियों और सांस्कृतियों को आपस में जोड़ा है। बल्कि इसने देश के दूसरे प्रातों भाषाओं, बोलियों और संस्कृतियों को जोड़कर एक साझा सांस्कृतिक विरासत के भारतीय प्रत्यय को बल प्रदान किया है। इस तरह से पूर्वोत्तर भारत के साहित्यकारों ने प्रकृति को अपना चिरनतन सहयोगी माना है। इसलिए उनकी भाषाओं की शब्द सम्पदा, भाव सम्पदा, और अन्य अनेक प्रकार की अभिव्यक्तियाँ प्रकृति के प्रदाय की ऋणी है। फलस्वरूप प्रकृति ने इस मनुष्य की संस्कृति संरचना में भी महत्वपूर्ण जगह बनाई है। फिर इस संरचना ने प्राथमिक तौर पर उनके साहित्य को गहरी प्रभावित किया है। वहाँ के लौकिक साहित्य का रेशा-रेशा प्रकृति के मुक्तहस्त अवदान का ऋणी है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. पूर्वोत्तर समन्वय- सं. डॉ. अपर्णा सारस्वत, अंक-18, 2013
2. वही, अंक-8 ,2010
3. हंस-संपादक- सहाय, जून, 2016, पृष्ठ-77
4. वही, पृष्ठ-78
5. पूर्वोत्तर समन्वय- सं.- डॉ. अपर्णा सारस्वत- अंक-18, 2013 पृष्ठ-6

कर्मफल

पवन कुमार वाशिष्ट
नीपको, नई दिल्ली

प्राचीन भारत में, एक अत्यंत धर्मी-कर्मी और न्यायप्रिय राजा था जो प्रजा का बहुत प्रिय था। वह सदैव प्रजा की सेवा में लगा रहता था। एक बार राजदरबार में, कर्मों के विषय में, वाद-विवाद हो रहा था तभी राजदरबार में एक संत का आगमन हुआ उन्होंने राजा को राज्य की भलाई के लिए चेताया कि वह कुछ कार्यों में कदापि शामिल न हो। संत ने राजा को आगाह किया कि वह राज्य के लिए नया घोड़ा ना खरीदे और यदि खरीदे तो कदापि उसकी सवारी ना करे और उसकी सवारी करे तो दक्षिण दिशा में घने वन की तरफ ना जाए, अगर जाए तो सुंदर महिला मिल जाए तो उससे बात न करे और ना ही उसको अपने साथ घोड़े पर कभी भी महल में लाए और यदि महिला को महल में अपने साथ ले भी आए तो उससे कभी भी शादी ना करे और शादी कर भी ले तो वो उसके साथ किसी भी यज्ञ में शामिल ना हो। भविष्य के बारे में बताकर संत जी राजदरबार से राजा कि सहमति से चले गए।

कुछ समय बाद राजा ने नया सुंदर और अति ताकतवर घोड़ा खरीदा। उसने यह सोचा कि वह इसकी सवारी नहीं करेगा, परंतु वज़ीर के बहुत आग्रह करने के बाद जैसे ही राजा घोड़े पर बैठा घोड़ा बिना रुके दक्षिण की ओर सरपट दौड़ने लगा और घने वन में अति सुंदर महिला के पास निर्जन जगह पर ही जाकर रुका। महिला ने राजा को निर्जन वन में उसको जंगली जानवरों से बचाने के अनुरोध किया तो राजा ने महिला को बचाने के लिए उसे अपने साथ महल ले आया और निश्चय किया कि वह कदापि महिला से विवाह नहीं करेगा। महिला राजा के साथ महल में रहने लगी। समय बीतता गया एक दिन राजा ने वज़ीर के अति निवेदन के बाद उसी अति सुंदर धार्मिक और मृदु स्वभाव वाली महिला से शादी रचा ली जिसे वह वन से लाया था।

कुछ साल बीतने के बाद, रानी ने राजदरबार में एक प्रस्ताव रखा कि जनता के परोपकार और राज्य की समृद्धि के लिए एक महा-यज्ञ का आयोजन किया जाए और प्रजा को भोज में शामिल किया जाए। इस पर राजा चाह कर इस आयोजन के लिए मना नहीं कर सका। तय समय पर राजा और रानी की तरफ से भव्य यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें रानी ने राजा से कहा कि हमें भी मिलकर प्रजा को भोजन परोसना चाहिए और इस सेवा का लाभ उठाना चाहिए। फिर दोनों मिलकर प्रजा को भोजन परोसने लगे। इस उपरांत, रानी ने भोज कर रही प्रजा पर यह आरोप लगाया कि ये लोग मुझे बुरी नजर से देख रहे है तो राजा ने क्रोध के वशिभूत होकर यज्ञ में ही भोज कर रहे करीब पाँच सौ लोगों को वही काट डाला। पूरे राज्य में, हाहाकार मच गया और अगले दिन राजदरबार में जनता इस मारकाट पर रोष प्रगट करने आई तो पुन: वही संत राजदरबार में फिर से आए और इस दुखद घटना पर बहुत अफसोस जाहिर किया, परंतु उन्होंने यह भी बताया कि यह राजा के कर्मो का फल था और होनी अटल है, जिसकी भविष्यवाणी के बाद भी राजा अपने आप को पापकर्म से नहीं बचा सका जैसा कि संत कबीर साहिब ने भी अपने दोहे में बहुत अच्छा वर्णन किया है कि करम गति टारै नाहिं टरे। इसके साथ ही और भी उदाहरण है:

मुनि वशिष्ट से पण्डित ज्ञानी, सिधि के लगन धरि।
सीता हरन मरन दसरथ को, बन में बिपति परी ॥1 ॥
कहँ वह फन्द कहाँ वह पारधि, कहँ वह मिरग चरी।
कोटि गाय नित पुन्य करत नृग, गिरगिट-जोन परि ॥2 ॥
पाण्डव जिनके आप सारथी, तिन पर बिपति परी।
कहत कबीर सुनो भै साधो, होने होके रही ॥3 ॥

इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि कर्मगति और कर्मफल सभी के लिए अटल है, चाहे वह भगवान हो, राजा हो या फिर प्रजा हो।

तीन बातें

अनमोल वचन

- तीन बातें कभी न भूलें – प्रतिज्ञा करके, क़र्ज़ लेकर और विश्वास देकर। – महावीर
- तीन बातें करो – उत्तम के साथ संगति, विद्वान् के साथ वार्तालाप और सहृदय के साथ मैत्री। – विनोबा
- तीन अनमोल वचन – धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और चरित्र गया तो सब गया। – अंग्रेजी कहावत
- तीन से घृणा न करो – रोगी से, दुखी से और निम्न जाति से। – मुहम्मद साहब
- तीन के आंसू पवित्र होते हैं – प्रेम के, करुना के और सहानुभूति के। – बुद्ध
- तीन बातें सुखी जीवन के लिए– अतीत की चिंता मत करो, भविष्य का विश्वास न करो और वर्तमान को व्यर्थ मत जाने दो।
- तीन चीज़ें किसी का इन्तजार नहीं करती – समय, मौत, ग्राहक।
- तीन चीज़ें जीवन में एक बार मिलती है – मां, बाप और जवानी।
- तीन चीज़ें पर्दे योग्य है – धन, स्त्री और भोजन।
- तीन चीजों से सदा सावधान रहिए – बुरी संगत, परस्त्री और निन्दा।
- तीन चीजों में मन लगाने से उन्नति होती है – ईश्वर, परिश्रम और विद्या।
- तीन चीजों को कभी छोटी ना समझे – बीमारी, कर्जा, शत्रु।
- तीनों चीजों को हमेशा वश में रखो – मन, काम और लोभ।
- तीन चीज़ें निकलने पर वापिस नहीं आती – तीर कमान से, बात जुबान से और प्राण शरीर से।

- तीन चीजें कमज़ोर बना देती है – बदचलनी, क्रोध और लालच।
- तीन चीज़े असल उद्धेश्य से रोकती हैं – बदचलनी, क्रोध और लालच।
- तीन चीजें कोई चुरा नहीं सकता – अकल, चरित्र, हुनर।
- तीन व्यक्ति वक़्त पर पहचाने जाते हैं – स्त्री, भाई, दोस्त।
- तीनों व्यक्ति का सम्मान करो – माता, पिता और गुरु।
- तीनों व्यक्ति पर सदा दया करो – बालक, भूखे और पागल।
- तीन चीज़े कभी नहीं भूलनी चाहिए – कर्ज़, मर्ज़ और फर्ज़।
- तीन बातें कभी मत भूलें – उपकार, उपदेश और उदारता।
- तीन चीज़े याद रखना ज़रुरी हैं – सच्चाई, कर्तव्य और मृत्यु।
- तीन बातें चरित्र को गिरा देती हैं – चोरी, निंदा और झूठ।
- तीन चीजें हमेशा दिल में रखनी चाहिए – नम्रता, दया और माफ़ी।
- तीन चीज़ों पर कब्ज़ा करो – ज़बान, आदत और गुस्सा।
- तीन चीज़ों से दूर भागो – आलस्य, खुशामद और बकवास।
- तीन चीज़ों के लिए मर मिटो – धैर्य, देश और मित्र।
- तीन चीजें इंसान की अपनी होती हैं – रूप, भाग्य और स्वभाव।
- तीन चीजों पर अभिमान मत करो – ताकत, सुन्दरता, यौवन।
- तीन चीजें अगर चली गयी तो कभी वापस नहीं आती – समय, शब्द और अवसर।
- तीन चीजें इन्सान कभी नहीं खो सकता – शान्ति, आशा और ईमानदारी।
- तीन चीजें जो सबसे अमूल्य है – प्यार, आत्मविश्वास और सच्चा मित्र।
- तीन चीजे जो कभी निश्चित नहीं होती – सपनें, सफलता और भाग्य।
- तीन चीजें, जो जीवन को संवारती है – कड़ी मेहनत, निष्ठा और त्याग।
- तीन चीजें किसी भी इन्सान को बरबाद कर सकती है – शराब, घमन्ड और क्रोध।
- तीन चीजों से बचने की कोशिश करनी चाहिये – बुरी संगत, स्वार्थ और निन्दा।
- कोई भी कार्य करने से पहले – सोचो, समझो, फिर करो।

संग्रहित

जीवन में ईमानदारी की भूमिका

पिंटु सिंह
सहायक–III (हिन्दी)
ढेप, दोयांग, नागालैंड

ईमानदारी जीवन भर विभिन्न महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिसे खुली आंखों से बहुत स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कहा जाता है कि समाज में लोगों द्वारा एक ईमानदार व्यक्ति उस व्यक्ति के लिए सबसे अच्छा पूरक है। यह वास्तविक संपत्ति है जो व्यक्ति जीवन में कमाता है जो कभी खत्म नहीं होती है।

समाज में ईमानदारी की कमी अब लोगों के बीच सबसे बड़ा अंतराल है। यह माता-पिता-बच्चों और छात्रों-शिक्षकों के बीच उचित पारस्परिक संबंध की कमी के कारण है। ईमानदारी कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे खरीदा या बेचा जा सके। यह धीरे-धीरे विकसित की जा सकती है। एक बच्चे के लिए घर और स्कूल अच्छी आदतों को विकसित करने के लिए सबसे अच्छी जगह है।

घर और स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ बच्चा नैतिक नैतिकता सीखता है। इस प्रकार, एक बच्चे को नैतिकता के करीब रखने के लिए शिक्षा प्रणाली में कुछ आवश्यक रणनीति होनी चाहिए। माता-पिता और शिक्षकों की मदद से बच्चों को घर और स्कूल में ईमानदारी का अभ्यास करने के लिए बचपन से ही सही तरीके से निर्देश दिया जाना चाहिए।

किसी भी देश के युवा उस देश के भविष्य हैं, इसलिए उन्हें नैतिक चरित्र विकसित करने के बेहतर अवसर दिए जाने चाहिए, ताकि वे अपने देश का बेहतर तरीके से नेतृत्व कर सके। ईमानदारी सभी मानवीय समस्याओं का सही समाधान है। आजकल, हर जगह, भ्रष्टाचार और समाज में विभिन्न समस्याओं के कारण ईमानदार लोगों की संख्या कम हो रही है। ऐसे तेज और प्रतिस्पर्धी माहौल में लोग नैतिक नैतिकता को भूल गए हैं।

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सामान्य चीज़ो को भी असाधारण रूप से अच्छी तरह से करना होता है। – अज्ञात

जिसमें दया नहीं है, वह तो जीते जी ही मुर्दे के समान है। दूसरे का भला करने से ही अपना भला होता है। – अज्ञात

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैला हुआ यह भारत एक राष्ट्र है, अनेक राष्ट्रीयताओं का समूह नहीं । – अटल बिहारी वाजपेयी

लोगों के लिए उदाहरण स्थापित करना दूसरों को प्रभावित करने का एक मात्र साधन है। –अल्बर्ट आइंस्टीन

ईश्वरीय शक्ति के सम्मुख मानवीय शक्ति बली नहीं है। – दंडी

डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम की चन्द लाईने जो हमें जीवन में हमेशा याद रखनी चाहिए और हो सके तो उसे अमल भी करना चाहिए

गोपाल कुमार गुप्ता
वरि. हिंदी अनुवादक

1. जिंदगी में कभी भी किसी को बेकार मत समझना,
   क्योंकि बंद पड़ी घड़ी भी दिन में दो बार सही समय बताती है।।
2. किसी की बुराई ताश करने वाले इंसान की मिसाल उस मक्खी की तरह है, जो
   सारे खूबसूरत जिस्म को छोड़कर केवल जख्म पर ही बैठती है।
3. टूट जाता है गरीबी में वो रिश्ता जो खास होता है,
   हजारों यार बनते हैं जब पैसा पास होता है।।
4. मुस्कुरा कर देखो तो सारा जहाँ रंगीन है,
   वर्ना भी पलको से तो आईना भी धुधंला नजर आता है।।
5. जल्द मिलने वाली चीजें ज्यादा दिन तक नहीं चलती,
   और जो चीजें ज्यादा दिन तक चलती है वो जल्दी नहीं मिलती।।
6. बुरे दिनों का एक अच्छा फायदा,
   अच्छे-अच्छे दोस्त परखे जाते हैं।।
7. बीमारी खरगोश की तरह आती है और कछुए की तरह जाती है,
   जबकि पैसा कछुए की तरह आता है और खरगोश की तरह जाता है।।
8. छोटी-छोटी में आनंद खोजना चाहिए,
   क्योकि बड़ी-बड़ी तो जीवन में कुछ ही होती है।
9. ईश्वर के कुछ मांगने पर न मिले तो उससे नाराज न होना,
   क्योकि ईश्वर वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता है,
   बल्कि वह देता है जो आपको लिए अच्छा होता है।।
10. लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए,
    क्योकि कभी गुच्छे की आखिरी चाबी भी ताला खोल देती है।।
11. ये सोच है हम इंसानों की कि एक अकेला क्या कर सकता है,
    पर देख जरा उस सूरज को वो अकेला ही तो चमकता है।।
12. रिश्ते चाहे कितने ही बुरे हो उन्हें तोड़ना मत क्योकि,
    पानी चाहे कितना भी गंदा हो अगर प्यास नहीं बुझा सकता
    वो आग तो बुझा सकता है।।
13. अब वफा की उम्मीद भी किससे करे भला,
    मिट्टी के बने लोग कागजों में बिक जाते हैं।।
14. इंसान की तरह बोलना न आये तो,
    जानवर की तरह मौन रहना अच्छा है।।
15. जब हम बोलना नहीं जानते थे तो हमारे बोले बिना ''माँ''
    हमारी बातों को समझ जाती थी और आज हम हर बात पर कहते हैं
    छोड़ों भी 'माँ' आप नहीं समझोंगी।।
16. शुक्र गुजार हूँ उन तमाम लोगों का
    जिन्होंने बुरे वक्त में मेरा साथ छोड़ दिया,
    क्योकि उन्हें भरोसा था कि मैं मुसीबतों से
    अकेले ही निपट सकता हूँ।।
17. शर्म की अमीरी से इज्जत की गरीबी अच्छी है।।
18. जिदंगी में उतार-चढ़ाव का आना बहुत जरूरी है,
    क्योकि में सीधी लाईन का मतलब मौत ही होता है।।
19. रिश्ते आजकल रोटी की तरह हो गई है,
    जरा सी आंच तेज क्या हुई जल भुनकर खाक हो जाते ।।
20. जिंदगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो,
    खुद अच्छे बन जाओ आपसे मिलकर शायद किसी की तलाश पूरी हो।।

संग्रहित

विजेता बोलते हैं कि मुझे कुछ करना चाहिए, जबकि हारने वाले बोलते हैं कि कुछ होना चाहिए। - शिव खेरा

प्राचीन काल में असम के शोणितपुर जनपद – एक सिंहावलोकन

दीपांकर बरुआ
महाप्रबंधक(सी)
एवं जन सूचना अधिकारी,शिलांग

प्राचीन कामरूप देश में प्रागज्योतिषपुर और शोणितपुर यह दो राज्य प्रसिद्ध थे । जहा प्रागज्योतिषपुर में दानव राज नरकासुर ने राज किया था, शोणितपुर राज्य में बलि पुत्र महाराज वाण (वानासूर) का शासन था । महाराज नरक की अधिस्त्रात्री देवी माँ कामाख्या थी, जबकी वाण थे परम शिवभक्त । कालिका पुराण और योगिनी तंत्र में नरक और वाण के समय के इतिहास के बारे में लिखा है एवं इसमें दो राजाओं के सम्बन्धों का स्पष्ट वर्णन भी किया गया है। वाण का नगर शोणितपुर महाबाहु लौहित्य के किनारे में स्थित एक अति सुंदर नगरी थी, जिसका रक्षण खुद बाबा भोलेनाथ ने किया था। शोणित का असमिया प्रतिशब्द 'तेज' अर्थात लहू है अत: वर्तमान तेजपुर नगरी तथा शोणितपुर जिला ही पौराणिक शोणितपुर राज्य थे, यह निश्चित है।

शोणितपुर जनपद राजा वान और उनकी सुपुत्री उषादेवी की कथा से समृद्ध है। वान ने अग्निगढ़ नामक ब्रह्मपुत्र के किनारे स्थित एक टोले में उषा को रखा था। उषा का समाचार लेने महाराज प्राय: अपनी राजधानी से निकाल कर आते-जाते थे। असल में उस समय तक यह नगरी, जहाँ की अग्निगढ़ स्थित है, कन्यापुर (वान कन्या उषा के लिए) नामसे प्रसिद्ध थे। कन्यापुर में महाभैरव, रुद्रपद, हलेस्वर, टिंगेस्वर, लिंगेस्वर आदि अनेक मंदिर राजा वान ने अपने शिव आराधना हेतु स्थापन किया था। कन्यापुर में लौहित्य तट पर कन्यकाश्रम में देवी माँ भी प्रकट है, भैरवी के रूप में। इसी देवी माँ के दर्शन के लिए उषादेवी भी सखी सहेली समेत रोज आती थी। कहा गया है कि उषा ने श्रीकृष्ण के नाती अनिरुद्धा कुमार के साथ गोपन प्रणय रचा और अपने पिता को गुप्त रखके सखी चित्रलेखा की सहायता से शादी कर ली। इसमें पिता वान अत्यंत क्रोधित हो गए और अनिरुद्ध को नागपाश द्वारा बंदी बना लिया। नारद मुनि से यह समाचार मिलने पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारका से शोणितपुर पहुंचे और वान को युद्ध के लिए ललकारा। वानासूर और श्रीकृष्ण के बीच में कन्यापुर मे भीषण लड़ाई हुई, जिसमें मित्र वान को सहायता देने हेतु देवाधिदेव महादेव भी पहुंचे। कथित है कि हरी और हर की इस लढ़ाई में खून की नदी बह गयी। जिसके कारण नगरी का नाम शोणितपुर हुआ। अंत में हर को परास्त करके भगवान विष्णु ने वान से अपने नाती को मुक्त किया तथा वान को जीवन दान दिया और उषा को बहू के रूप में स्वीकार किया। पुराण में वर्णित यह एक सुंदर कहानी है।

अतीत में शोणितपुर जनपद में अनेक राजाओं ने शासन किया था। सन् 820 में शलस्तंभा वंश का महाराज हरजरवरमा शोणितपुर के नृपति बने। तेज़पुर शहर में स्थित विशाल हर्जरा तालाब उन्होंने ही खोदवाया था। महाराज हरजरवरमा ने ब्रह्मपुत्र के तट पर एक प्रकांड प्रस्तर लिपि लिपिबद्ध किया, जिसमें बोला गया था कि अति सुंदर नगरी हरूपेसस्वर में हरजरवरमा की राजधानी थी। यह हरूपेसस्वर ही आधुनिक तेज़पुर है यह अभिमत इतिहासकारों का है हरूपेसस्वर में शलस्तंभा राज्य की राजधानी सांतवी शदी से दशवीं शदी तक थी। तेज़पुर के दाह पर्वतीय क्षेत्र में स्थित प्रख्यात शैल द्वार इसी शलस्तंभा वंशीय राजाओं की देन है, जोकि गुप्त युग के मनोरम स्थापत्य शैली को दर्शाता है। शलस्तंभा वंश के अंतिम नृपति नि:संतान होने के कारण उनकी निधन के पश्चात ब्रहमपाल नामके एक व्यक्ति राजा बने। पाल वंश के कुल आठ नृपति का नाम उपलब्ध होते है, जिसके भीतर एकादश शदी में शोणितपुर शासन करने वाला महाराज रत्नपाल का नाम सबसे प्रसिद्ध था। इस वंश के राजाओं ने द्वादश शदी तक शोणितपुर में अपना शासन चलाया। पाल वंश के पश्चात भुईयाओं ने पूर्व में घिलाधारी नदी से लेकर पश्चिम में बेलशिरी नदी तक शोणितपुर में कब्जा किया। भुईयाओं की राजधानी नगाँव जिले में बरदोवा नामक जगह में थी जिसमे सन 1449 में भुईयाओं का मुखिया कुसुम्बर भुईयान के पुत्र के रूप में महान वैष्णव संत महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव का आविर्भाव हुआ। भुईयाओं के पतन के बाद ब्रह्मपुत्र के उत्तरकुल में कोच राजाओं ने अपना आधिपत्य विस्तार किया। बाद में कोच राज्य भी दो हिस्सों में बाट गए। कोच राजा महाराज नरनारायण पश्चिमी भाग को अपने पुत्र लक्ष्मी नारायण के लिए रखा और पूर्व भाग महावीर शीलाराय के पुत्र रघुदेव को प्रदान किया। जबकि पूर्व भाग की राजधानी वर्तमान लखीमपुर जिले के नारायणपुर में थी और पश्चिमी प्रांत के राजधानी बरनगर में थी। महाराज नरनारायण के बाद में लक्ष्मी नारायण राजा बने और रघुदेव के उत्तराधिकारी महाराज परीक्षित नारायण बने। इन दो राजाओं में मतान्तर होने पर दोनों में लड़ाई हो गई। लक्ष्मी नारायण मुग़लों की सहायता से परीक्षित नारायण पर विजय प्राप्त कर लेता है। बाद में कोच राज्य का पूर्वी और पश्चिमी दोनों भाग पराक्रमी आहोम राजा के अधीन हो गया । इसी तरह सतरवीं सदी के मध्य भाग से शोणितपुर अर्थात तेज़पुर में आहोम के शासन में परिवर्तन हुए। सन् 1826 में आहोम राजा से समूचे असम को ब्रिटिश राज ने हस्तगत किया। ब्रिटिशों ने सन 1835 में प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर असम के दरंग जिला में तेज़पुर नगरी की स्थापना की ।

देश की रक्षा राजा की सेना नहीं करती, देश की प्रजा करती है । – लक्ष्मीनारायण मिश्र

निगम द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाएं

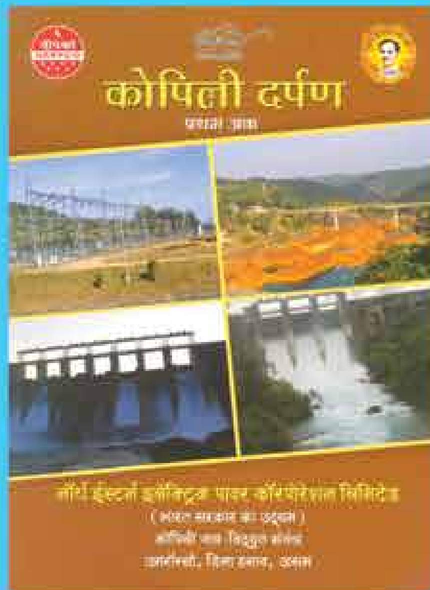

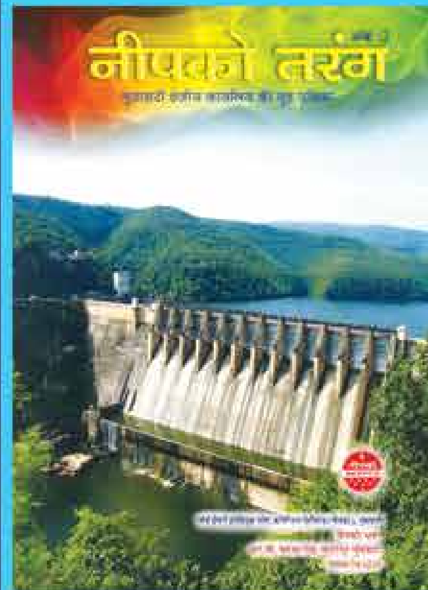

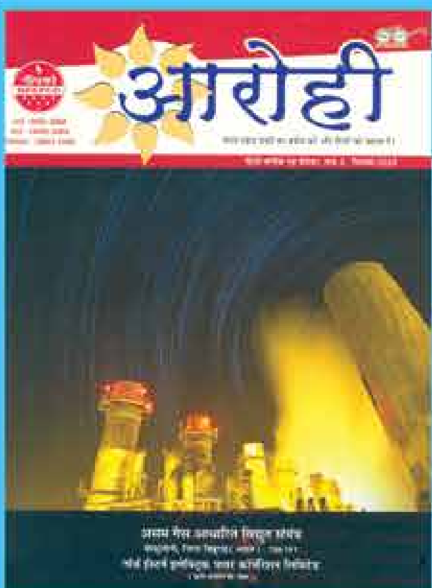

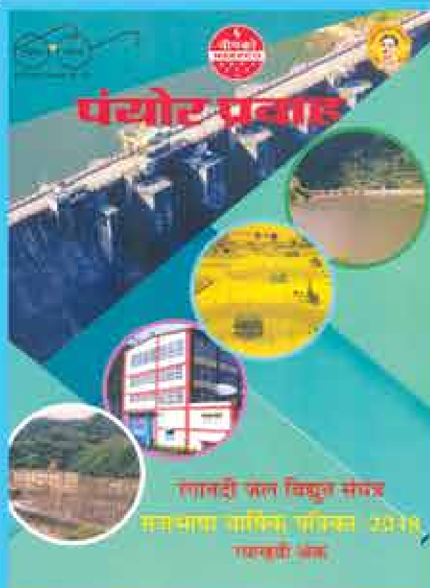

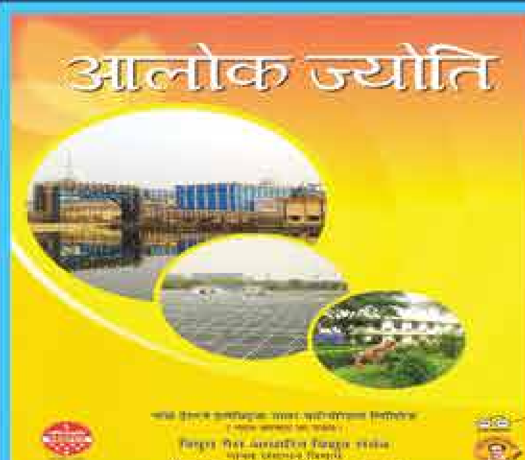

तेज़पुर नगर में अग्निगढ़ पहाड़ पर
स्थापित वानसूर और अनिरुद्ध कुमार की मूर्तिया

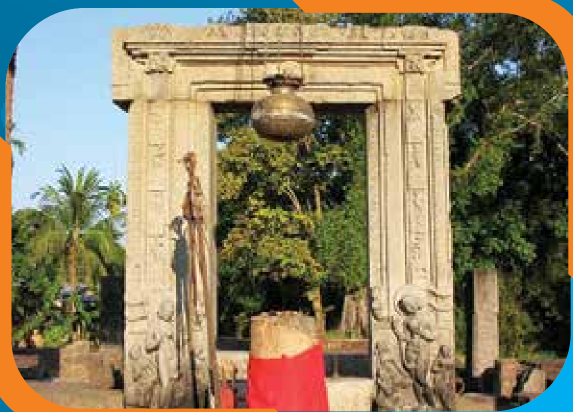

दाह पर्वतीया के शैलद्वार

बामुनी पहाड़ पर प्राचीन मंदिर के ध्वंशावशेष

ISO 9001 & 14001
OHSAS 18001

नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(मिनी रत्न, श्रेणी - I, भारत सरकार का उद्यम)
ब्रुकलैण्ड कम्पाउण्ड, लोअर न्यू कालोनी
लाइतुम्ख्रा, शिलांग - 793003, मेघालय
ईपीबीएक्स: 0364-2222070, 2222094, फैक्स: 0364-2223790
वेबसाइट: **www.neepco.gov.in**; ई-मेल: **info@neepco.gov.in**

Design & production: Exclusive Advertising Pvt. Ltd., Guwahati